RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 फरवरी 2023

बाल विज्ञान पत्रिका, फरवरी 2023

चकमक

मूल्य ₹50

फूल और तितलियाँ

मुकेश मालवीय
चित्र: पूजा मेनन

फूल खिले जून में
या देहरादून में
आबोहवा सुकून में

तितलियाँ
त्रिपुरा की
या तिब्बत की
बातें करें
मोहब्बत की

अंक 437 • फरवरी 2023

चकमक

इस बार

तितलियाँ और फूल - मुकेश मालवीय 2
भैंस की सवारी - आस्था चौधरी 4
गणित है मज़ेदार - आलोका कान्हेरे 6
भूलभुलैया 11
जब मैं गंगा से मिली - लारन्या मिश्रा 12
अन्तर ढूँढो 14
विस्थापन - सबा 15
छोटी बहनें तौबा - शाना 18
अमन की कुछ बातें - अमन मदान 20
भालू ने खेली फुटबॉल - हरदर्शन सहगल 22
लीनी की डायरी - शिवकुमार गांधी 24
क्यों-क्यों 28
माथापच्ची 32
चित्रपहेली 34
मेरा पन्ना 36
तुम भी जानो 43

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण: मनस्वी भटनागर, दूसरी, सिड्नी, ऑस्ट्रेलिया

चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

भैंस की सवारी

आस्था चौधरी
चित्र: वन्दना सिंह

ये उस समय की बात है जब मैं चौथी क्लास में पढ़ती थी। मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगता था। तो मैं पूरा दिन क्लास की खिड़की से बाहर देखती रहती। हर बार स्कूल में पैरेंट-टीचर मीटिंग के टाइम मेरी खूब शिकायतें आतीं – बातें करने की, कहानियाँ सुनाने की और ध्यान भटकाने की। घण्टों तक टीचर से डाँट खाने के बाद फिर घरवालों से भी खूब डाँट पड़ती। घर में सब कहते, "अगर पढ़ोगी नहीं तो भैंस चराओगी।" भैंस चराना और गोबर उठाना, एक तरह से हर दिन की धमकी हो गई थी।

मैं सोचने लगती कि अगर सच में मैं नहीं पढ़ पाई तो क्या होगा। ये सोचते ही मैं काँप तो जाती। पर इन सब का मुझ पर कुछ खास असर न हुआ। और मैं उसी तरह अपनी दुनिया में मगन रही। हालाँकि बार-बार मिलने वाली इस धमकी से मेरा डर दूर होते गया। पढ़ाई के बारे में तो नहीं, लेकिन भैसों की दुनिया के बारे में मैं ज़रूर सोचने लगी।

सोचती कि ये चार पैर वाला दोस्त कैसा रहेगा। वैसे भैंस चराना इतना भी बुरा नहीं है। सोचती कि उसे चराते हुए मैं कैसी लगूँगी? कैसा लगता होगा उसकी पीठ पे रानी की तरह बैठकर सवारी करना? बड़े सींगों वाली भैंसें, छोटे सींगों वाली भैंसें या बिना सींगों की भैंसें कैसी लगती होंगी – इसकी कल्पना करते ही मेरे मन में एक खुशी की लहर दौड़ उठती। मैं

सोचती कि उसकी सवारी करते कहाँ-कहाँ तक जाया जा सकता है।

क्या मैं किसी दूर देश जा सकती हूँ? अगर हाँ, तो वाह ये कितना मज़ेदार होगा! ऐसे ढेरों सवाल मन में आते-जाते। लेकिन ये सवाल टीचर से तो दूर घरवालों, पापा, मम्मी किसी से भी पूछने की हिम्मत न होती। पता था कि पूछने पे मार भी पड़ सकती है।

गाँव जाती तो देखती कि भैंस काले और भूरे रंग की होती है। उसकी कद-काठी, उसकी बनावट को बड़े ध्यान-से देखती, मानो मैं कोई व्यापारी हूँ। लेकिन मेरी कल्पना तो काफी आगे थी। मुझे और रंगों की भैंसें भी देखनी थीं। इसलिए मैंने अलग-अलग रंग की भैंसों के चित्र बनाने शुरू किए। कभी लाल, कभी पीली तो कभी हरी। लेकिन नीले रंगवाली मेरी पसन्दीदा थी।

कई साल बीत गए और मेरी भैंस पे सवारी करने की बात भी बीत गई। मेरी पढ़ाई भी खतम हो गई। फिर कुछ दिन पहले मैं अपने काम के चलते बन्नी घास के मैदान गई। वहाँ मैंने एक सफेद भैंस देखी। उसे देखते ही भैंस की सवारी कर लेने की मेरे बचपन की चाहत सामने आ गई।

वो सफेद भैंस बहुत सारी काली भैंसों के बीच बैठी हुई थी। बड़ी अद्‌भुत जान पड़ रही थी। पूछने पे पता चला कि कई पीढ़ियों में एक-दो भैंसों का रंग ऐसा हो जाता है।

उस दिन मेरी बचपन की रंग-बिरंगी भैंसों में से एक तो मिल गई। बाकी की तलाश अभी जारी है। क्या पता वो भी दुनिया के किसी कोने में हों और मेरा इन्तज़ार कर रही हों। खासकर नीली वाली जिस पे बैठकर दुनिया घूमने का खयाल कभी मेरे बचपन में आया था।

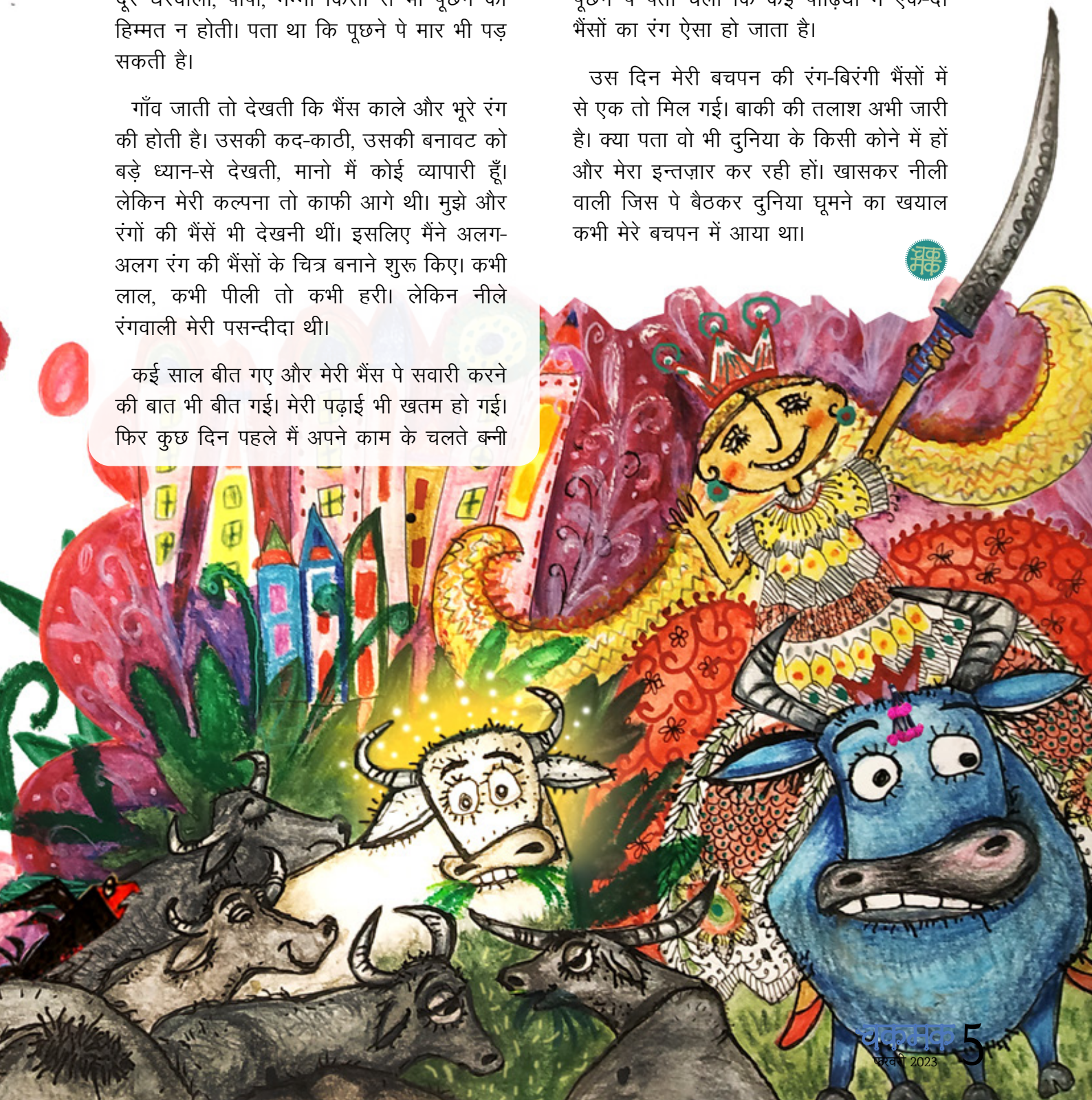

पाइथागोरस त्रिक

आलोका कान्हेरे

अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री

गणित है मज़ेदार

सायरा सुन! आज मैंने समकोण त्रिभुजों के बारे में कुछ बहुत ही दिलचस्प बात खोजी है।

सच में? बता फिर।

मैं तुझे एक उदाहरण देकर बताता हूँ।

3 इकाई

5 इकाई

4 इकाई

समकोण त्रिभुज

अब सभी भुजाओं का वर्ग करने पर हमें मिलता है 9, 16 और 25। दिलचस्प बात यह है कि $9 + 16 = 25$!

अरे हाँ! $3^2 + 4^2 = 5^2$!

है ना मज़ेदार?

ऐसा और भी समकोण त्रिभुज बन सकता है क्या?

3, 4, 5...
$3^2 + 4^2 = 5^2$...
5, 12, 13...
$5^2 + 12^2 = 13^2$...

समकोण त्रिभुज बन गया!

$25 + 144 = 169$

मतलब

$5^2 + 12^2 = 13^2$

हमारे टीचर ने हमें बताया कि तीन संख्याओं के ऐसे समूह को **पाइथागोरस त्रिक (Pythagoras triplets)** कहते हैं।

पाइथागोरस एक ग्रीक गणितज्ञ थे। वे पाँचवीं सदी ईसा पूर्व (2500 से भी ज़्यादा साल पहले) में हुआ करते थे। उनके नाम पर ही इसका नाम 'पाइथागोरस त्रिक' पड़ा। पाइथागोरस ने गणित की पढ़ाई के लिए समर्पित लोगों का एक ग्रुप भी बनाया था।

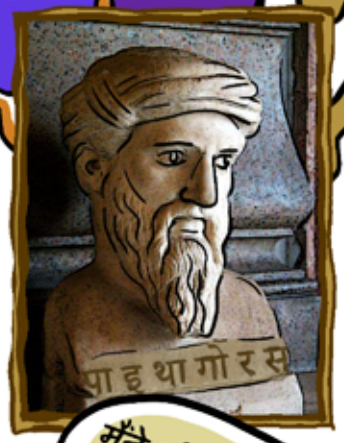

5, 12, 13 ऐसा एक त्रिक है। तो तेरे कहे अनुसार 10, 24 व 26 भी एक पाइथागोरस त्रिक होना चाहिए।
$10^2=100$, $24^2=576$, $26^2=676$
अरे हाँ!!

मैंने भी एक रोचक बात खोजी है। यदि तुम इनमें से कोई भी एक त्रिक लो और उन सभी को एक समान संख्या से गुणा करो तो तुम्हें एक और त्रिक मिल जाएगा। जाँच कर देख।

ऐसा क्यों?

मिहिर ने कुछ और त्रिकों के लिए इसे जाँचकर देखा।
उनमें से कुछ थे: {3, 4, 5}, {5, 12, 13}, {7, 24, 25}, {8, 15, 17}
तुम भी जाँचकर देखना कि क्या सायरा की खोज सही है। और क्यों सही है इसका कारण बताने की भी कोशिश करना।

मिहिर के मन में सवाल सही आया है। क्यों?
क्यों ना तुम तीनों संख्याओं का वर्ग यानी कि $(m^2 + 1)^2$, $(m^2 - 1)^2$ और $4m^2$ निकालकर देखो कि सायरा यह त्रिक कैसे निकाल रही थी।

क्या तुम देख सकते हो कि मिहिर ऐसा क्यों कह रहा है?

तुम भी जाँचकर देखो कि $m^2 - n^2$, $2mn$, $m^2 + n^2$ किन्हीं भी दो संख्याओं के लिए हमेशा एक त्रिक देता है क्या... और अगर हाँ तो इसका क्या कारण है?

अगले अंक में हम इस नियम के बारे में और पता करते हैं।

जब मैं गंगा से मिली...

लारन्या मिश्रा
तीसरी, शिक्षान्तर स्कूल
गुरुग्राम, हरयाणा

चित्र: हरमनप्रीत सिंह

मैं राखी की छुट्टियों में ऋषिकेश गई थी। यह छह घण्टे का सफर था। दिल्ली से गुज़रते हुए मैंने ग्यारह मूर्ती और इंडिया गेट देखा। हम चाय और नाश्ते के लिए एक जगह पर रुके। ऋषिकेश पहुँचने से पहले हमने दूर से पहाड़ देखे। एक लम्बी घुमावदार सड़क खुल गई। उसके साथ-साथ गंगा नदी बह रही थी।

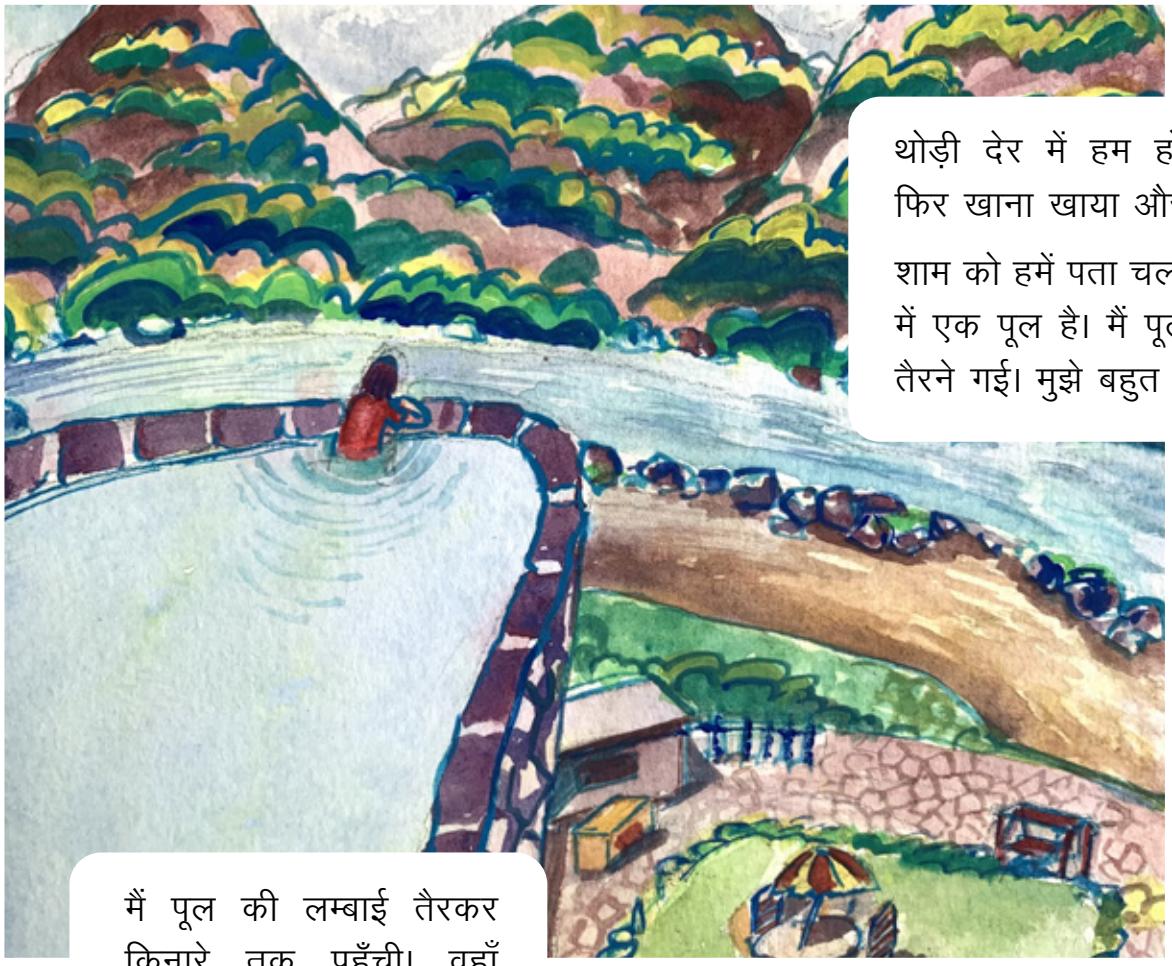

थोड़ी देर में हम होटल पहुँचे। फिर खाना खाया और सो गए।

शाम को हमें पता चला कि होटल में एक पूल है। मैं पूल के अन्दर तैरने गई। मुझे बहुत मज़ा आया।

मैं पूल की लम्बाई तैरकर किनारे तक पहुँची। वहाँ से मुझे गंगा दिख रही थी – सुन्दर, शक्तिशाली और ऊर्जा से भरी हुई।

रोज़ रात को मैं एक बड़े-से पत्थर पे बैठकर गंगा नदी को देखती। चाँद की रौशनी में छोटी-छोटी लहरें देखती। यह मेरा पसन्दीदा पल था।

रात को गंगा की आवाज़ मेरे कानों में गूँजती और मैं सो जाती।

एकलव्य प्रकाशन की किताब *ढोंगी लड़िया* से साभार

चित्र: कैरन हेडाक

ढूँढो अन्तर

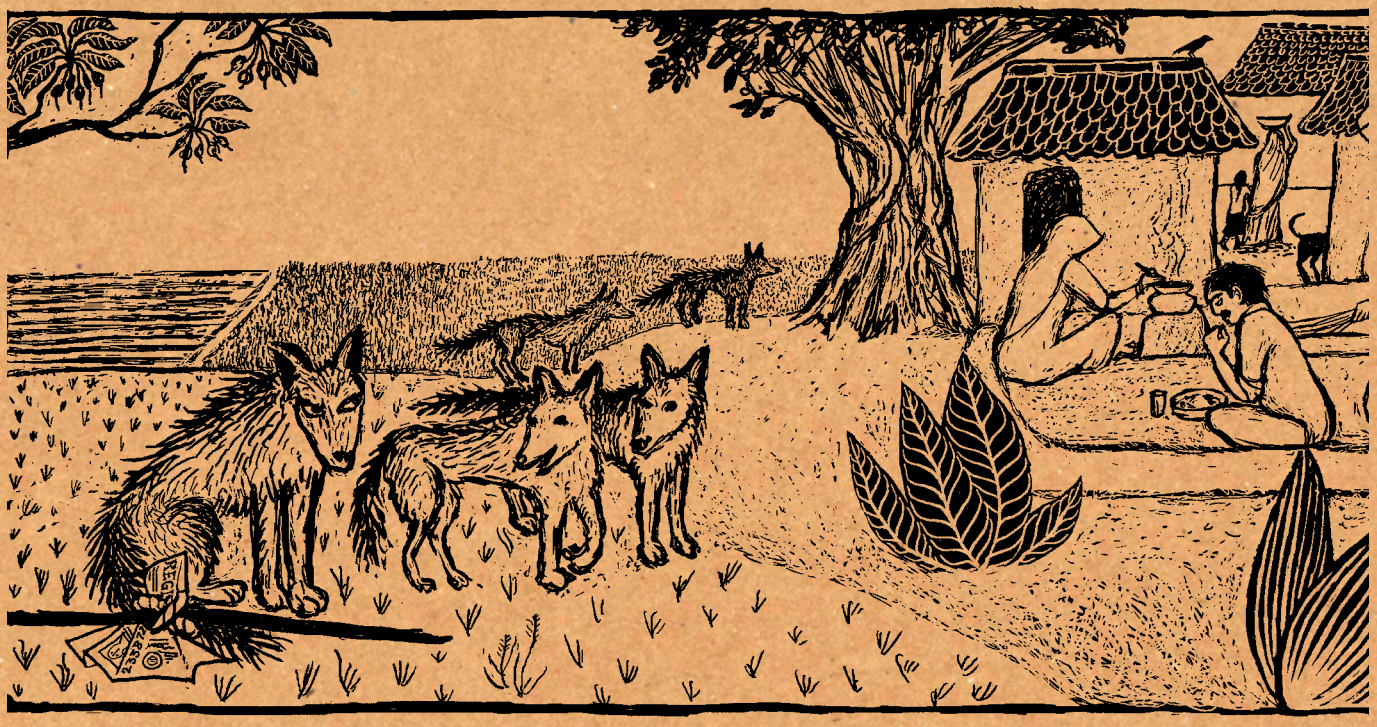

इन दो चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

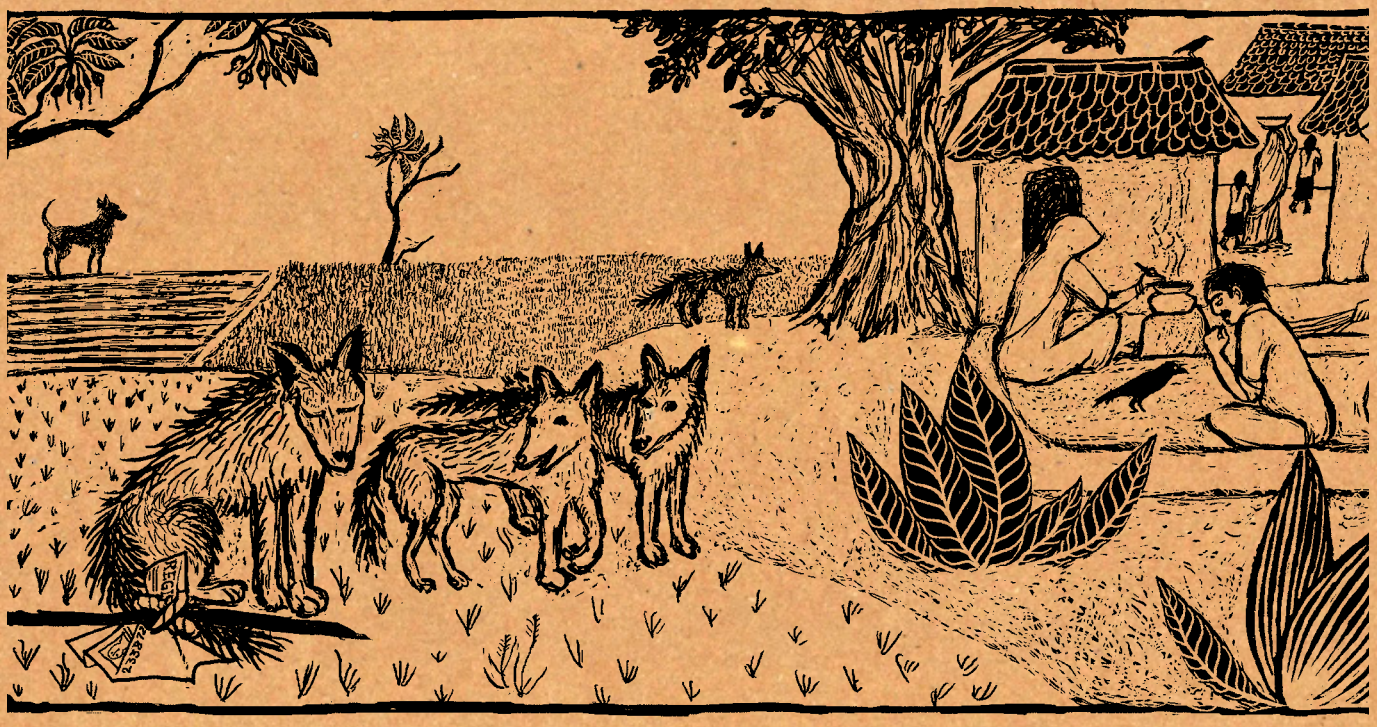

विस्थापन

सबा

यह लफ्ज़ हो सकता है तुमने पहले भी कभी सुना हो। इसका मतलब है अपनी जगह को छोड़कर किसी दूसरी जगह जाने के लिए मजबूर होना। अभी नवम्बर, 2022 की ही बात है। हमारे भोपाल शहर में एक बड़ी बस्ती हुआ करती थी। ये बस्ती ठीक उसी डाव केमिकल फैक्ट्री के सामने थी जहाँ आज से 38 साल पहले मिथाइल आइसोसायानेट नाम की ज़हरीली गैस का रिसाव हुआ था। इससे एक रात में हज़ारों लोगों की मौत हो गई थी।*

एक बस्ती का बसना

इन 38 सालों में मध्य प्रदेश के अलग-अलग ज़िलों के छोटे-बड़े गाँवों से लोग यहाँ आकर बसते चले गए। हालाँकि उस वक्त भी ये लोग अपनी पुरानी जगह से पलायन करके यहाँ आए थे। पर वो पलायन रोज़गार की तलाश में था। कुछ ऐसे परिवार भी यहाँ रह रहे थे जो पुराने शहर काज़ी कैम्प और पुतली घर एरिया से आए थे। रीवा तरफ के कुछ शाह परिवार के निर्माण-मज़दूर भी इस बस्ती में रह रहे थे। इस समुदाय के आदमी सड़क पर डामर डालते-फैलाते और औरतें उसी सड़क को झाड़तीं। जब परिवार बढ़े और घर में जगह तंग हो गई तब घर खरीदने की गुंजाइश न होने की वजह से लोग यहाँ बसते गए।

यहाँ ज़्यादातर मीरासी यानी शाहनाई वादक और बघ्घी चलाने वाले समुदाय के लोग थे। ये लोग रेल पटरियों के दोनों किनारों के फासले से अपनी झुग्गियाँ बनाकर रह रहे थे। इस जगह को निशातपुरा, अन्नूनगर, करोंद मण्डी के पास जैसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

शहनाई और बघ्घी में बारातें दोनों का ही दौर आगे नहीं बढ़ सका। इसलिए मीरासी परिवारों की नई पीढ़ी में भी इस काम को सीखने की ख्वाहिश बाकी नहीं रही। नतीजतन इन परिवारों की औरतें बर्तन धोने और लड़के-आदमी कंडेक्टरी,

बच्चों के स्कूल, लेट्रिन की लाइन, पीने का पानी, रकाबि, रुकसाना की काँच के बर्तनों से सजी अलमारी, शहाना की दुकान, अज़ीम भाई का छोटा-सा कारोबार सब तहस-नहस हो गया है। पटरियों के किनारे की यह आबाद जगह अब वीरान हो चुकी है।

*इस बारे में और जानने के लिए तुम एकलव्य से प्रकाशित पुस्तक *भोपाल गैस त्रासदी* भी पढ़ सकते हो।

पुताई की मज़दूरी के काम से जुड़ गए। इससे होनेवाली कमाई से वे बस रोज़ के खाने-पीने की गुज़र-बसर कर पा रहे थे। ऐसे में पटरियों के किनारे पर बनी झुग्गियाँ ही इनका सरमाया थीं।

बस्तीवालों का विस्थापन

अब जब रेलवे विभाग के लोगों को लगने लगा कि रहवासियों को पटरी के किनारों की जगह छोड़ देनी चाहिए तो वे बार-बार लोगों को चेताते। सरकारी चिट्ठी के ज़रिए कहते कि ये ज़मीन खाली कर दो। कई बार जब लोगों को ऐसी सरकारी चिट्ठियाँ मिलतीं तो वे बहुत डर जाते। लोग जानते थे कि रेलवे की ज़मीन पर बनी झुग्गियाँ तो उन्हें हटानी ही होंगी। वे बार-बार कभी सरकारी दफ्तरों में, तो कभी रेलवे के दफ्तरों में जा-जाकर इल्तिजा करते कि उन्हें उजाड़ा न जाए। वे हमेशा इसी उम्मीद में रहते कि जब हमें यहाँ से उजाड़ा जाएगा, तो सरकार हमारी मदद ज़रूर करेगी। या कहीं न कहीं हमें वापस झुग्गी बनाने की ज़मीं देगी, या फिर कोई मुआवज़ा।

और फिर 12 नवम्बर का वो दिन आ गया जब लोगों ने, बच्चों ने अपने सबसे अज़ीज़ सामानों को सबसे पहले अपनी गोद में भर लिया। खैरुन्निशा अम्मा कह रही थीं कि उनके लिए चाय के कुल्हड़ और फुकनी, टीन की पेटी और सिगड़ी सभी कुछ अज़ीज़ था।

मुस्कान अब्बा के साथ भाई की झुग्गी में रहने आ गई है। बड़े भाई-भाभी की झुग्गी टूटने के बाद वो भी बच्चों समेत यहाँ आ गए हैं। अब इस छोटी-सी झुग्गी में कुल 16 लोग रहते हैं। मुस्कान को अपनी पुरानी झुग्गी की जो चीज़ सबसे ज़्यादा याद आती है, वो है उसके सोने की जगह। वहाँ वह पैर लम्बे करके सो सकती थी। यहाँ ज़्यादा परिवारों के बीच ऐसा करना मुमकिन नहीं होता है। लेकिन मुस्कान अपने चेहरे पर मुस्कान लिए हुए कहती है, "अल्लाह का शुक्र है कि भाई ने इस झुग्गी में हम सबको रख लिया। नहीं तो हम कहाँ जाते।"

चन्द परिवारों को एक लोकल विधायक की मदद से अस्थाई झुग्गी बनाकर रहने की मोहलत मिल गई है। वे परिवार टैंकर से पानी लेकर पीते हैं और मोबाइल टॉइलेट का इस्तेमाल कर रहे हैं। फिरोज़ा बाजी कहती हैं, "कहाँ रहेंगे, कहाँ जाएँगे कुछ पता नहीं है। बस ये उम्मीद है कि सरकार हमें कहीं न कहीं बसा देगी। मुआवज़ा तो ज़रूर देगी।"

घर से जुड़ी कितनी यादें साथ रहेंगी ये तो नहीं पता। लेकिन अपनी नज़रों के सामने घर को टूटते देखना शायद कभी नहीं भूल पाएँगे।

रुकसाना अपने तीन बेटों के परिवार के साथ खुले मैदान में पन्नियों का टेंट बाँधकर रह रही हैं। वे कहती हैं, “मैं रात भर घूमकर देखती हूँ। जो ज़्यादा सिकुड़कर सोया होता है उसे अपने ओढ़ने के कपड़े ओढ़ा आती हूँ। पहले वाली झुग्गी की दीवारें पक्की नहीं थीं, लेकिन कम से कम उनसे झुग्गी के अन्दर हवा तो नहीं घुसती थी। इतने बिस्तर में गुज़र हो जाती थी। लेकिन इस मैदान में हम वही बिस्तर ओढ़कर सर्दी से नहीं बच पाते हैं। सर्द रात जब अपने शबाब पे होती है तो सबकी नींद खुल जाती है। सब अपने-अपने रज़ाई-कम्बल एक-दूसरे को देने को कहते हैं। बच्चे छोटे हैं तो उनका पहले खयाल रखते हैं। हम तो जागकर भी गुज़ारा कर लेंगे।”

बुशरा 19 साल की नई दुल्हन हैं। वो कुछ ही दिन पहले यहाँ शादी होकर आई हैं। वो कहती हैं, “अम्मी ने बहुत तंगी में भी एक-एक रुपए बचाकर मेरी शादी के वक्त कुछ सामान दिया था। शादी में नए कपड़े दिलाए थे। आज वो सामान, कपड़े रखने की जगह ही नहीं है। मेरे लिए ये सामान बहुत कीमती है। लेकिन कहाँ लेकर जाऊँ समझ में नहीं आता।”

बच्चों के स्कूल, लेट्रिन की लाइन, पीने का पानी, रकाबि, रुकसाना की काँच के बर्तनों से सजी अलमारी, शहाना की दुकान, अज़ीम भाई का छोटा-सा कारोबार सब तहस-नहस हो गया है। पटरियों के किनारे की यह आबाद जगह अब वीरान हो चुकी है।

रेलवे की जगह खाली हो गई है। शायद कई लोगों को लगे कि रेलवे की ज़मीन से दूर होकर लोग सुरक्षित रहेंगे। लेकिन वे कहाँ रहेंगे ये असुरक्षा का खौफ बस्ती के बच्चों-बुज़ुर्गों सभी के दिलों में है। नाज़िया, आईशा, इमरान, दिलशाद और इनकी तरह के न जाने कितने बच्चे यहीं पैदा हुए, बड़े हुए...। वे नहीं जानते वे कहाँ जाएँगे। जैनब कहती हैं कि घर से जुड़ी कितनी यादें साथ रहेंगी ये तो नहीं पता। लेकिन अपनी नज़रों के सामने घर को टूटते देखना शायद कभी नहीं भूल पाएँगे। नफीसा बाजी कहती हैं, “मैं जब से यहाँ ब्याह कर आई थी तबसे लकड़ी के फर्रों पर मिट्टी लगाती रही ताकि फर्रे बन्द हो जाएँ।” नईम यहीं पैदा हुआ है। उसके अम्मी-अब्बू बताते हैं कि उन्हें ठेकेदार यहाँ लाए थे। उन्होंने कई सड़कें डालीं भोपाल में।

विस्थापन बहुत तकलीफदेह चीज़ है। घर किसी इन्सान की पहली ज़रूरतों में से एक है। लेकिन इतनी विकसित और आधुनिक होती दुनिया में आज भी महज़ एक झुग्गी के लिए तरसते हुए करोड़ों लोग इस दुनिया और देश में मौजूद हैं। और हमारे भोपाल शहर में भी।

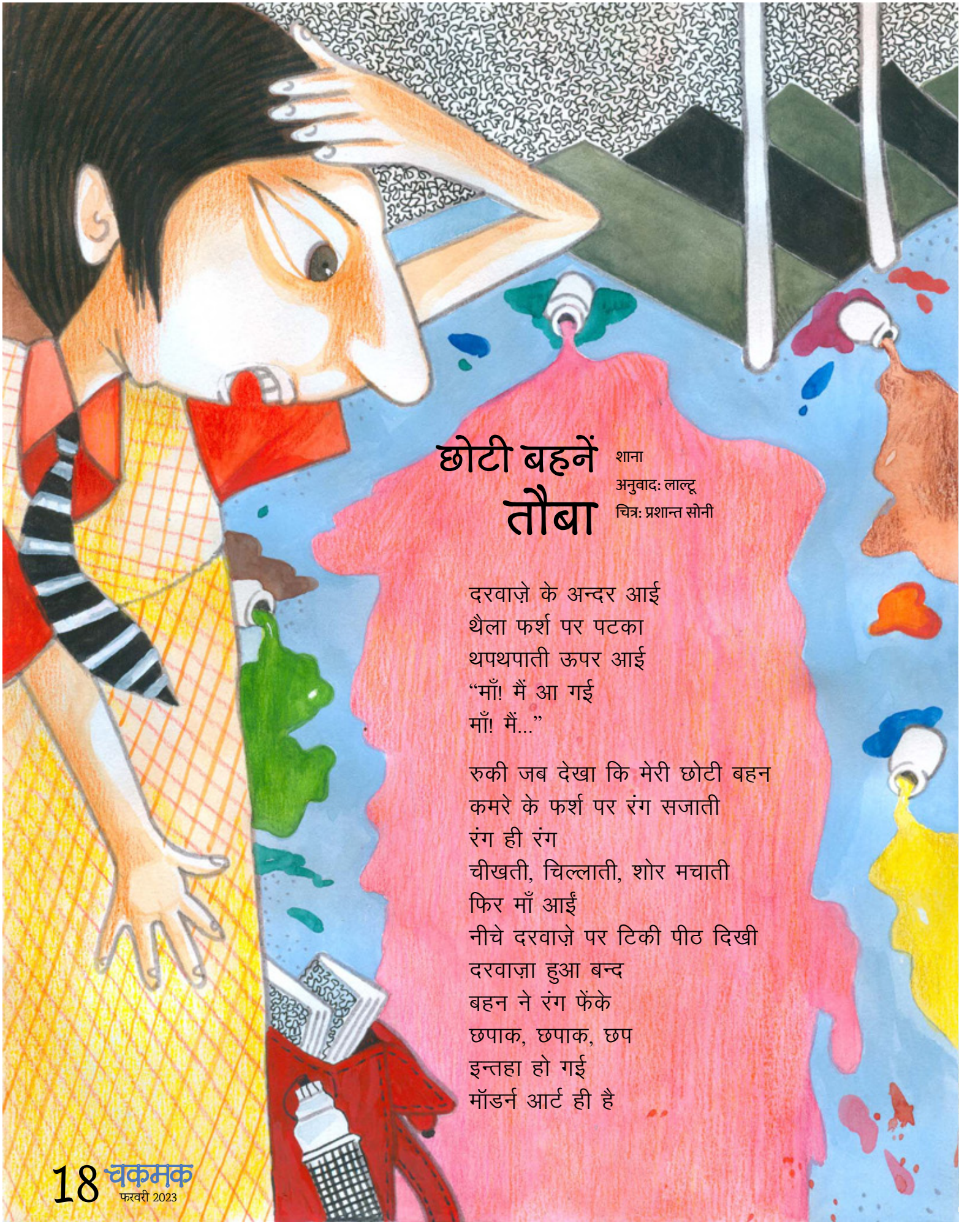

छोटी बहनें तौबा

शाना
अनुवाद: लाल्टू
चित्र: प्रशान्त सोनी

दरवाज़े के अन्दर आई
थैला फर्श पर पटका
थपथपाती ऊपर आई
“माँ! मैं आ गई
माँ! मैं...”

रुकी जब देखा कि मेरी छोटी बहन
कमरे के फर्श पर रंग सजाती
रंग ही रंग
चीखती, चिल्लाती, शोर मचाती
फिर माँ आईं
नीचे दरवाज़े पर टिकी पीठ दिखी
दरवाज़ा हुआ बन्द
बहन ने रंग फेंके
छपाक, छपाक, छप
इन्तहा हो गई
मॉडर्न आर्ट ही है

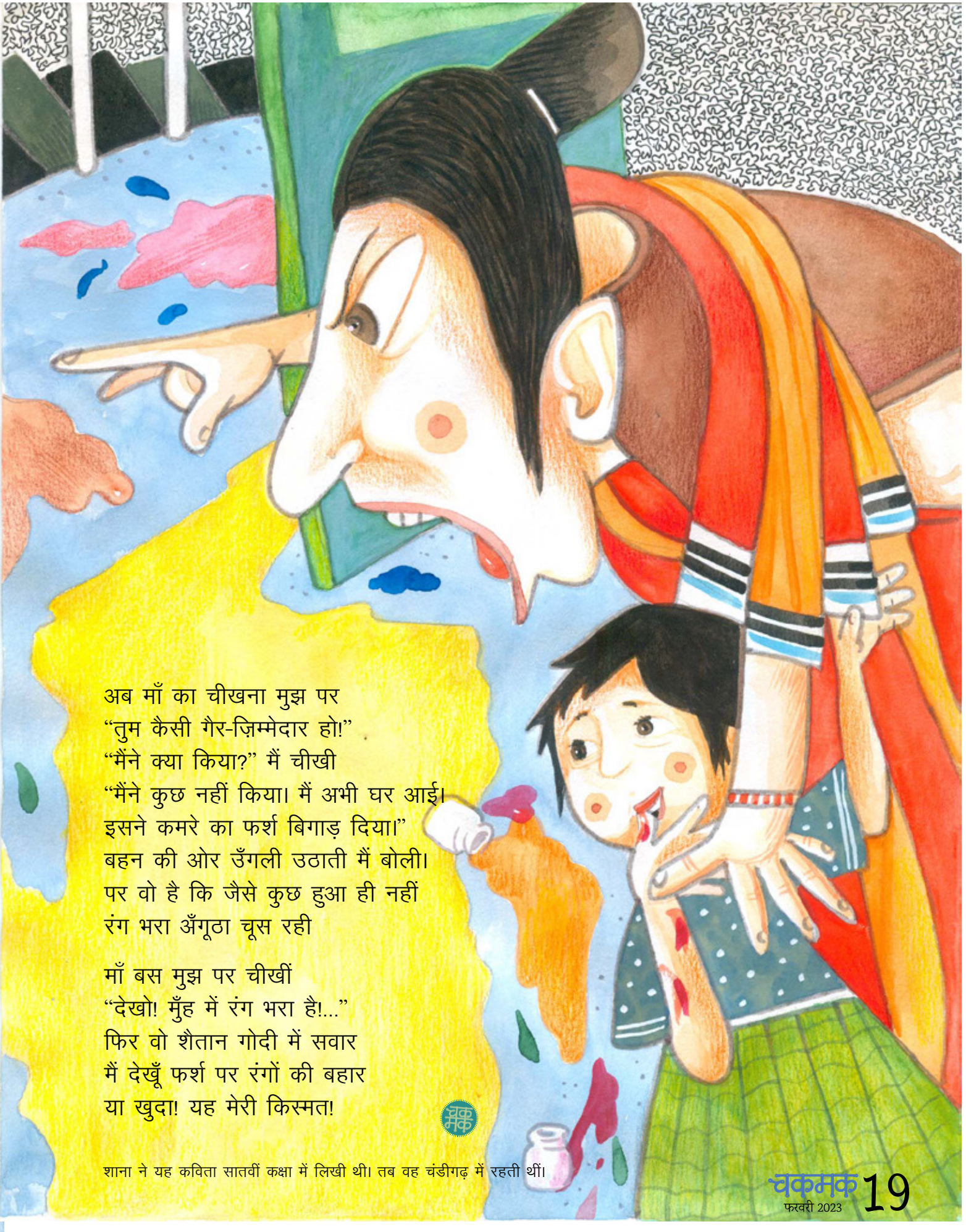

अब माँ का चीखना मुझ पर
“तुम कैसी गैर-ज़िम्मेदार हो!”
“मैंने क्या किया?” मैं चीखी
“मैंने कुछ नहीं किया। मैं अभी घर आई।
इसने कमरे का फर्श बिगाड़ दिया।”
बहन की ओर उँगली उठाती मैं बोली।
पर वो है कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं
रंग भरा अँगूठा चूस रही

माँ बस मुझ पर चीखीं
“देखो! मुँह में रंग भरा है!...”
फिर वो शैतान गोदी में सवार
मैं देखूँ फर्श पर रंगों की बहार
या खुदा! यह मेरी किस्मत!

शाना ने यह कविता सातवीं कक्षा में लिखी थी। तब वह चंडीगढ़ में रहती थीं।

अमन की कुछ बातें

जनवरी अंक से हमने 'अमन की कुछ बातें' नाम की यह सीरिज़ शुरू की है। इस सीरिज़ के तहत तुमने पिछले माह 'सुनने से भी मसले हल हो सकते हैं' लेख पढ़ा होगा। तुम्हें इस सीरिज़ के लेख कैसे लगे हमें ज़रूर बताना।

समस्या का समाधान

अमन मदान
अनुवाद: पूनम जैन
चित्र: कनक शशि

अपने अच्छे से अच्छे दोस्त के साथ भी कभी न कभी हम किसी न किसी बात पर असहमत हो जाते हैं। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिनसे हम लगभग सभी बातों पर असहमत होते हैं। असहमत होने पर हम अक्सर चुप्पी साध लेते हैं। या फिर हम दूसरे पर चिल्लाकर या डाँटकर बात खतम कर देते हैं। ये कहानियाँ उन युवा लोगों की हैं जिन्होंने वाद-विवाद से बेहतर ढंग से निपटना सीखा। उन्होंने समाधान निकालने के उन तरीकों को सीखा जो सबके हिसाब से सही होते थे और जिनसे दोस्ती का रिश्ता चलता रहता था।

राहुल और आरिफ पक्के दोस्त थे। वे हर काम साथ-साथ करते थे – कागज़ के जहाज़ उड़ाना, गली के कुत्तों के साथ खेलना, सड़क की बिल्लियों को दूध पिलाना और बारिश में नाचना वगैरह-वगैरह। आखिरी काम के लिए तो दोनों अपनी-अपनी माँ से डाँट भी इकट्ठे ही खाते। "वो राहुल, उसे तो अक्ल होनी चाहिए थी कि तुम्हें बारिश में भीगने न देता", आरिफ की माँ उफनते हुए कहतीं। "आरिफ ने तुम्हें रोका क्यों नहीं बारिश में भीगने से", राहुल की माँ भी आगबबूला होतीं। पर अगले ही दिन दोनों फिर से बारिश में जाकर नाचने लगते।

एक दिन उनकी लड़ाई हो गई और दोनों ने एक-दूसरे से बात करना बन्द कर दिया। इस बात से सब हैरान थे कि हमेशा साथ रहनेवाले ये दोस्त अलग कैसे हो गए। ये तब हुआ जब वे क्रिकेट खेल रहे थे और आमने-सामने की विकेट पर खड़े थे। वे लगातार रन बना रहे थे। तभी अचानक आरिफ फिसला और उसका टखना मुड़ गया। लड़खड़ाते हुए वह क्रीज़ की ओर बढ़ा और राहुल से चिल्लाकर बोला, "तुम ठीक से नहीं खेल रहे, थोड़ा धीमे हो जाओ। रन बनाने के लिए मुझे भगाते मत रहो।" लेकिन राहुल ने फिर से स्वीप शॉट मारा और रन लेने के लिए भागने लगा। आरिफ भी उसकी ओर दौड़ा लेकिन लड़खड़ाकर राहुल के साथ टकरा गया। वो खुद भी गिर पड़ा और उसे भी गिरा दिया। दूसरी टीम के फील्डर खुशी-से चिल्लाने लगे और उन्होंने तुरन्त राहुल को रन आउट कर दिया।

"तुम कितने आलसी और सुस्त हो, आरिफ" राहुल चिल्लाया। "सिर्फ तुम्हारी वजह से मैं आउट हो गया।"

"तुम कितने बेवकूफ हो। मैंने तुम्हें धीरे होने के लिए कहा, लेकिन अपने घमण्ड में तुमने सुना ही नहीं।" आरिफ वापिस उस पर चिल्लाया। दोनों ने एक-दूसरे को खूब भला-बुरा कहा और पैर पटकते हुए चल दिए ये सोचकर कि अब कभी वे एक साथ न हीं खेलेंगे।

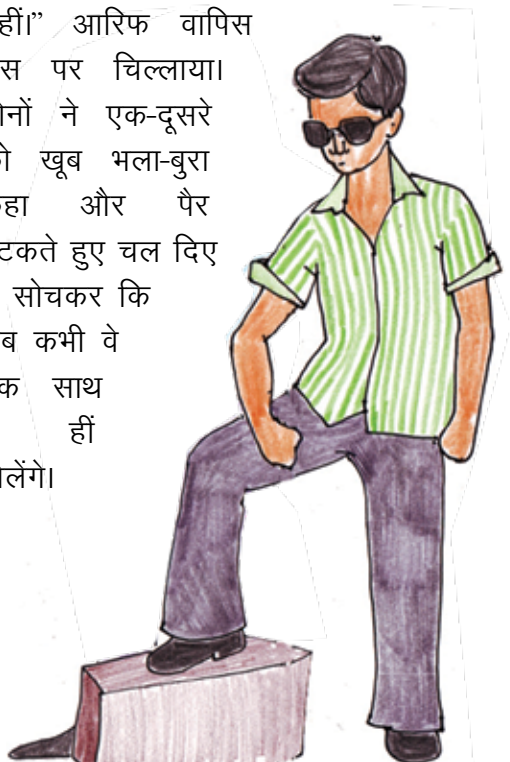

दिन गुज़रते गए। आरिफ उदास व अकेला महसूस करने लगा और राहुल भी। पर क्या किया जा सकता था!

ईद के दो दिन बचे थे। हर साल राहुल खूब सज-धजकर आरिफ के यहाँ जाता और ईद मनाता था। आरिफ की अम्मी ने जब उसे अपने में गुम, चुपचाप बैठे देखा तो पूछा कि क्या बात है, कई दिनों से राहुल तुम्हारे साथ नहीं दिखा। कुछ हुआ है क्या? तब आरिफ ने उन्हें सारी कहानी सुनाई। वे बोलीं, "जो राहुल ने किया वह गलत था, पर तुमने जो किया वह भी गलत था।"

"पर अब मैं क्या करूँ, अम्मी? उसने मुझे इतना कुछ कहा और मेरा दिल दुखाया तो मैंने भी कह दिया।"

"तुम्हें जाकर फिर से उससे बात करनी चाहिए।"

"और जाकर क्या कहूँ कि उसने कितना गलत किया।" आरिफ ने पूछा।

"नहीं, मैं तुम्हें एक राज़ की बात बताती हूँ कि कैसे अपने दुश्मन को दोस्त बनाया जा सकता है। 'तुमने ये किया' कहने के बजाए ये कहो, 'जब ये हुआ मुझे बुरा लगा।' इससे एक-दूसरे से बात करना आसान हो जाएगा।"

अगले दिन लंच टाइम में आरिफ राहुल के पास गया। आरिफ को अपनी ओर आता देख राहुल की मुट्ठियाँ भिंच गईं। वह सोचने लगा, "अब वो फिर से कहेगा कि मैं बेवकूफ और मतलबी हूँ।" लेकिन आरिफ बोला, "मुझे बहुत बुरा लगा जब तुम मुझ पर चिल्लाए। मेरे टखने पर चोट लगी थी। इसीलिए मैं तुमसे टकराकर गिर पड़ा था।" राहुल हैरान हो गया। उसने एक पल सोचा और फिर बोला, "मुझे नहीं पता था कि तुम्हें चोट लगी है। मुझे भी बहुत बुरा लगा जब तुमने मुझे पागल और बेवकूफ कहा।"

आरिफ ने नीचे देखा और धीमी आवाज़ में बोला, "मैं उखड़ा हुआ था और मुझे बहुत गुस्सा आ गया था। मेरा इरादा तुम्हें दुखी करने का नहीं था। मैं गेम नहीं हारना चाहता था।"

"अब तो मुझे भी ये सोचकर बुरा लग रहा है कि कैसे तुम लँगड़ा रहे थे और मैं तुम पर चिल्लाता रहा!" राहुल ने कहा।

ईद के दिन आरिफ नए कपड़े पहनकर राहुल के साथ बैठा था। राहुल ने भी सुन्दर-से नए कपड़े पहन रखे थे। "तुम्हारी अम्मी ने तुम्हें अच्छी सलाह दी," राहुल बोला। "ये कहना कितना बेहतर है कि 'मुझे बुरा लगा...' बजाए इसके कि 'तुमने ये किया...'। जब तुमने मुझे बताया कि तुम्हें कैसा लगा, तो मैंने ये सोचना छोड़ दिया कि तुम मुझ पर इल्ज़ाम लगा रहे थे। और फिर मैंने भी तुम पर वापिस वार करना छोड़ दिया।"

"हाँ", आरिफ ने कहा। "जब तुमने बताया कि तुम्हें कैसा लगा तो मैंने भी गुस्सा थूक दिया और तुम्हारी बात सुनने लगा।"

दोनों ने अपनी ईद की सेवइयाँ उठाई और खाने लगे। सेवइयाँ वाकई बड़ी मीठी व स्वादिष्ट थीं।

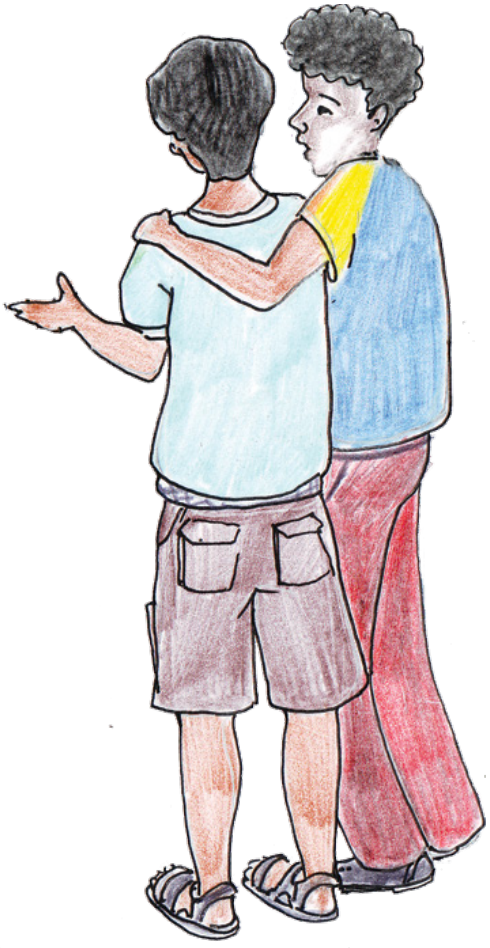

भालू ने खेली फुटबॉल

हरदर्शन सहगल

चित्र: रंजित बालमुचु

सर्दियों का मौसम था। चारों तरफ कोहरा छाया हुआ था। शेर का एक बच्चा गोल-मटोल होकर जामुन के पेड़ के नीचे सोया हुआ था।

तभी एक भालू सैर करता हुआ जामुन के पेड़ के नीचे जा पहुँचा। वहाँ उसने जामुन के पेड़ के नीचे शेर के बच्चे को पड़ा देखा। उसने शेर के बच्चे को फुटबॉल समझा। और ज़ोर-से अपने पैरों से उसे उछाल दिया।

घबराया शेर का बच्चा दहाड़ा और उसने पेड़ की एक डाल पकड़ ली। पर डाल टूट गई।

भालू को मामला समझ में आ गया। उसने दौड़कर फुर्ती से शेर के बच्चे को पकड़ लिया।

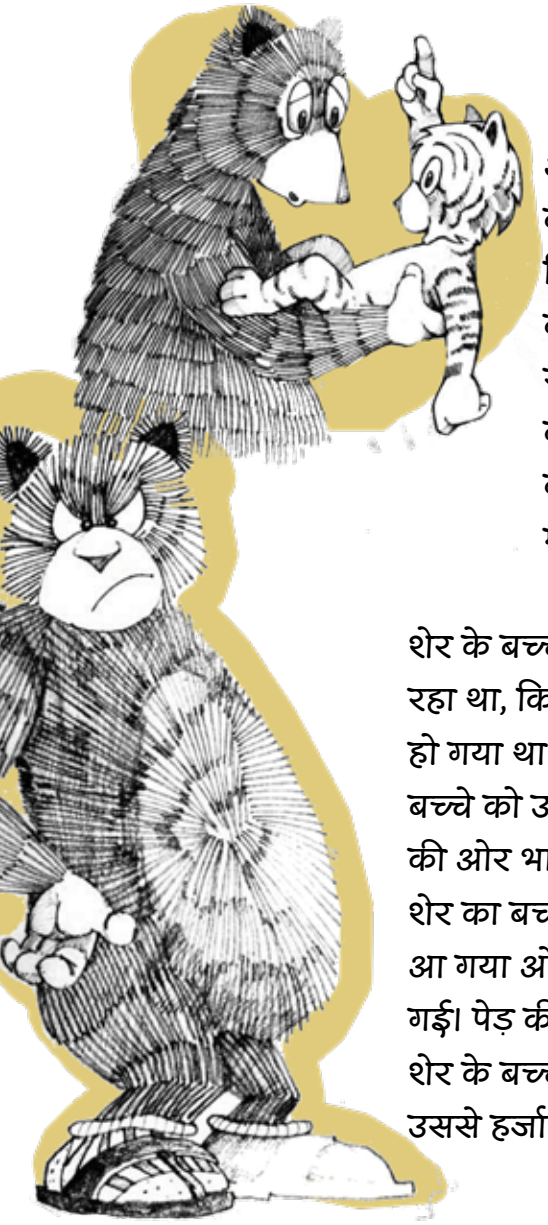

अरे! पर, यह क्या? शेर का बच्चा तो भालू को फिर से उछालने के लिए कह रहा था। इस प्रकार से भालू ने शेर के बच्चे को एक-दो नहीं, बल्कि कई बार अपने पैरों से मारकर उछाला।

शेर के बच्चे को उछलने में मज़ा आ रहा था, किन्तु भालू थककर परेशान हो गया था। बारहवीं बार शेर के बच्चे को उछालकर भालू अपने घर की ओर भाग खड़ा हुआ। इस बार शेर का बच्चा धड़ाम से ज़मीन पर आ गया और पेड़ की डाल भी टूट गई। पेड़ की टूटी डाली देखकर माली शेर के बच्चे पर बरस पड़ा और उससे हर्जाने की माँग करने लगा।

शेर के बच्चे ने माली से कहा कि ठीक हो जाने पर मैं तुम्हें हर्जाना दे दूँगा। माली ने कहा कि ठीक है, मैं अभी आता हूँ। माली के वहाँ से जाते ही शेर का बच्चा भी नौ दो ग्यारह हो गया। उसने सोचा कि जान बची तो लाखों पाए!

लीनी की डायरी

शिवकुमार गांधी
चित्र: प्रशान्त सोनी

1

सोमवार की शाम खेलने जाने से पहले मैं सोचती रही।

बस सोचती ही रही कि सड़क सफेद रंग की कैसे हो सकती है? और वो भी पानी में?

मुझे कल सपना आया था कि मैं घर के पास वाले पोखर के पास खड़ी हूँ और पोखर के पानी के अन्दर मुझे सफेद रंग की सड़क दिख रही है। वहाँ एक साइकिल भी है जिसे शायद मैं कुछ-कुछ ठीक कर रही हूँ।

मतलब कि पोखर के पानी में जो सफेद सड़क दिख रही है उस पर साइकिल चलाने के लिए उसे ठीक करती हुई मैं लीनी। जिसको कि पोखर के पास खड़ी मैं लीनी देख रही हूँ। मैं दो-दो लीनी।

और ऊपर से यह कि दो लीनी को एक सोती हुई मैं लीनी सपने में देख रही थी। मतलब कि मैं तीन लीनी हुई।

एक, जो सोते हुए सपना देख रही है। दूसरी, जो सपने में पोखर के पास खड़ी है। तीसरी, जो सपने में पानी में सफेद सड़क पर साइकिल ठीक कर रही है।

बस यही अचरज था। तब से मैं बस सोच रही हूँ कि ऐसा भला कैसे? मैं तीन-तीन लीनी। वो भी एक ही समय में।

मैंने बाबा से सुबह उठकर पूछा। उन्होंने हँसते हुए कहा कि सपने तो बस आ जाते हैं और मेरे सिर पर एक चुम्मी दी। मुझे चुम्मी मिली। पर जवाब नहीं मिला। जवाब मिलता तो अच्छा होता। वैसे चुम्मी भी अच्छी थी।

तीन लीनी। कोई जादू है क्या? पर मन को अच्छा लगा। गिन्नी से पूछूँगी कि उसने भी कभी ऐसा सपना देखा है क्या? हाँ गज्जू और शिबू से भी पूछूँगी।

मैंने अपनी डायरी का नाम 'बिल्लो' रखा था। यह डायरी मुझे शिबू ने दी थी। अब सोच रही हूँ कि इस डायरी का नाम 'तीन लीनी का जादू' रख दूँ।

2

बाहर आँगन में जो नींबू का पेड़ है उसका नाम मैंने 'कोयल की बैठक' रखा है। और उपनाम 'उड़ती कोयल'।

मैं जब नींबू के पेड़ पर कोयल को बैठी देखती हूँ तो मुझे लगता है कि वह सिर्फ नींबू का पेड़ ही नहीं है, एक बैठक भी है। कोयल की बैठक। फिर बैठने के बाद कहीं और उड़ जाती हुई उड़ती कोयल।

जब पूरा चाँद आता है तब नीले आकाश में नींबू जिस तरह से पीले दिखते हैं तो ऐसा लगता है कि कोयल की बैठक में आज क्या लाइटिंग का इन्तज़ाम हुआ है।

कई बार मैंने बहुत रात को बैठक में कोयल को गाते सुना है।

जब कोई बकरी अपनी दो टाँगों पर उठकर कोयल की बैठक के पत्ते खा रही होती है तो लगता है कि कोयल की बैठक में कोई मेहमान आकर नाश्ता कर रहा है।

और जब पके हुए नींबू माँ पेड़ से ले आती है तब लगता है कि कोयल की बैठक ने हमें उपहार भेजा है।

सुबह की ओस में कोयल का इन्तज़ार

भीगी हुई बैठक में कोयल का इन्तज़ार

धूप आएगी

ओस और धूप के बीच कोयल का इन्तज़ार

बैठक की दीवारें हरी चमकेंगी

पीले-पीले छोटे नींबू के सूरज के साथ दमकेंगी

कोयल पर यह छटा खूब फबेगी

यह कविता मैं शिबू को ज़रूर सुनाऊँगीं। और पक्के से शिबू कहेंगे, "चमकेगी, दमकेगी, फबेगी की अच्छी धुन बैठाई है। चलो, इसे गाकर देखते हैं।"

शिबू जब तुम यहाँ आओ तो घर की बैठक में जाने से पहले यह कोयल की बैठक ज़रूर देखना। इसमें बैठना मत। बस देखना।

गिन्नी, गज्जू, अनि, सुमन या सब लोग, उनके घर में भी पक्के से कोई न कोई ऐसी बैठक होती होगी। पूछूँगी उनसे।

3

मैं सोचना शुरू करूँ तो सोचती ही चली जाऊँ। पता नहीं क्यों?

दिन जल्दी-जल्दी बीत जाए। पता नहीं क्यों?

शाम में मैं जब खेलकर वापस आऊँ तो मेरा मन उदास रहे। पता नहीं क्यों?

बाबा ने कल हरी पैंट पहनी। पता नहीं क्यों?

अभी तीन दिन पहले पप्पू जब दूध देने घर आया, उसने मेरे गाल पर चिकोटी काटी और हँसने लगा। पता नहीं क्यों?

कल गिन्नी चुप-चुप थी। पता नहीं क्यों?

स्कूल में सुबह की सभा में लाइन में खड़े ही खड़े रहो। पता नहीं क्यों?

कमरे में खिड़की सिर्फ एक, घर का दरवाज़ा सिर्फ एक। पता नहीं क्यों?

हाथी वैसा और चूहा ऐसा। पता नहीं क्यों?

चिड़िया उड़े, गिलहरी चले। पता नहीं क्यों?

गिलहरी की पूँछ और मैं बिन पूँछ, हाथी की तो सूँड और मेरी चोटी। पता नहीं क्यों?

देखूँ जरा दिमाग के मन में 'पता नहीं क्यों' वाली जेब भारी है या जो 'मुझे जो पता है' उसकी जेब भारी है?

अब वो कौन-सी है? कैसे जानूँ? या ना जानूँ?

पता नहीं क्यों?

4

शिबू ने मुझे एलिस की कहानी सुनाई थी 'आश्चर्यलोक में एलिस' यानी 'एलिस इन वण्डरलैण्ड'।

सुनकर मैं तो खो गई। मुझे मेरे सपने याद आए। मुझे एलिस अच्छी लगी। एलिस के चित्र में उसकी फ्रॉक बहुत सुन्दर है। मैंने तो हरी सलवार पहन रखी थी और पाँव में चप्पल। एलिस के जूतों जैसे जूते तो फरजाना पहनकर आती है। पेड़ से झाँकती बिल्ली बहुत सुन्दर थी।

मैं सोचती रही ऐसा कैसे? कितनी अलग है एलिस की ज़िन्दगी। कितनी जगह घूम आई वो। कितने सारे लोगों से तो बात की उसने। मुझे अच्छा लगा कि वह डरी नहीं। मुझे भी ऐसा जादू आना चाहिए। मुझे भी कहीं ऐसी जगह जाना है। यह जादू है या इसमें छिपी कोई और बात है। मुझे अभी समझ नहीं आया। पर कहानी में जो-जो भी होता है वह अलग है।

फिर भी मैं सोचती रही कि ऐसा कैसे? मैं रोई और सोचा मेरा आ श्च र्य लो क कहाँ है, कौन-सा है, कैसा है?

शिबू ने बताया कि यह किताब हिन्दी में इंग्लिश से अनुवाद करके लिखी गई। मतलब कि पहले यह इंग्लिश में लिखी गई और फिर इसे हिन्दी में लिखा गया। इसे ही अनुवाद करना कहते हैं शायद। इंग्लिश में लिखी थी लुइस कैरल ने और हिन्दी में लिखी जिन्होंने उनका नाम मुझे शिबू ने जब बताया तो थोड़ी देर तो मैं समझी ही नहीं। बड़ा भारी-सा नाम था – शमशेर बहादुर सिंह।

उस दिन तो मैं बार-बार शिबू को यह नाम अलग-अलग आवाज़ों में सुना रही थी। कि श्श म श्शे र

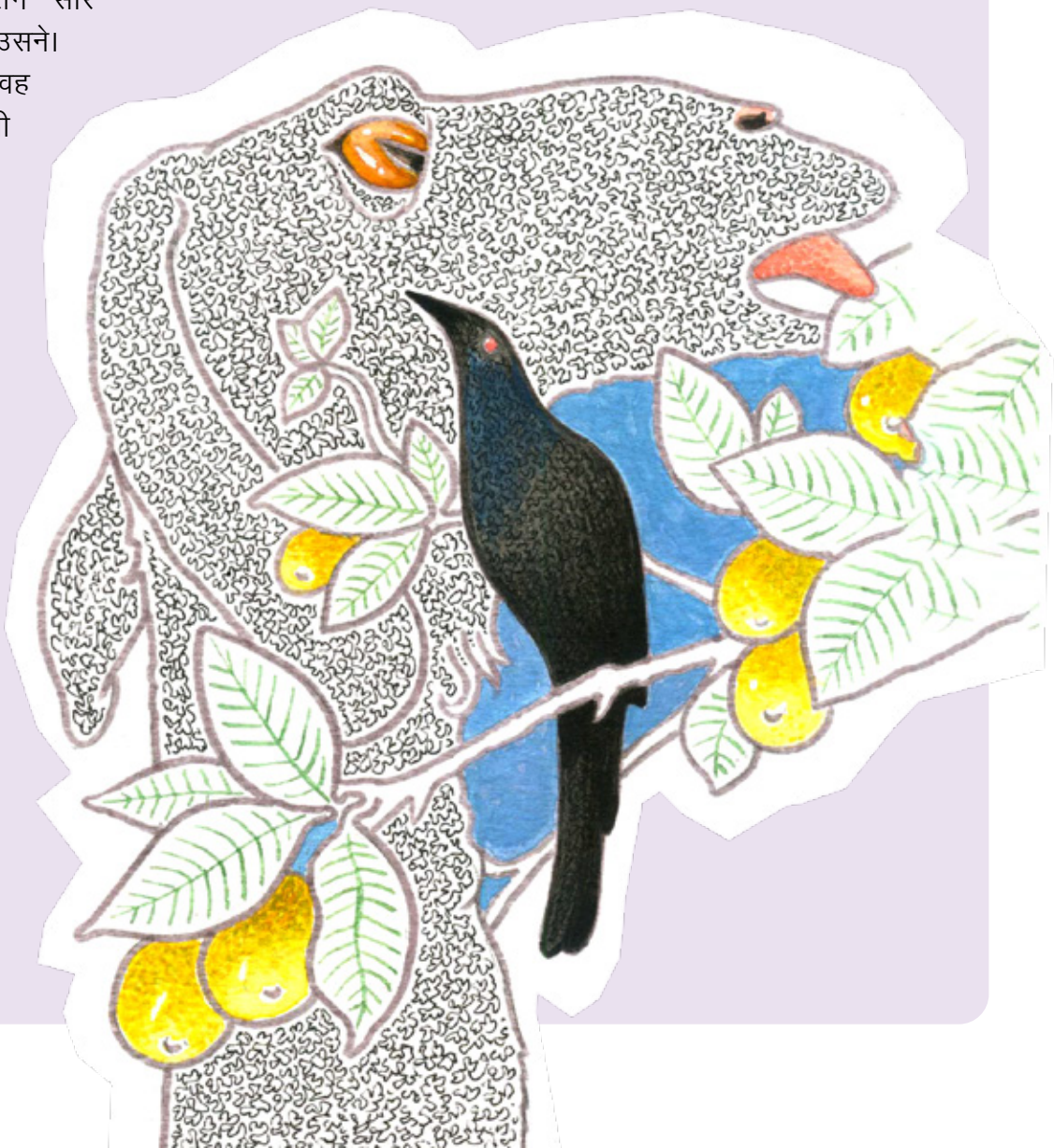

बहा हा हा दुर सिं सिं सिंह। या श्शम श्शेर सिंह या बहादुर शमशेर या सिंहों में बहादुर श्शमशेर। मुझे मज़ा आया। यह नाम मुझे अच्छा लगा। तो पक्के से मुझे अपनी किसी मनपसन्द बात या दोस्त का नाम श्शमशेर बहादुर सिंह तो रखना ही है।

शिबू ने बताया कि जब तुम थोड़ी-सी और बड़ी हो जाओ तो फिर तुम इनकी कविताएँ भी पढ़ना। मुझे यह बात थोड़ी अलग लगी। क्योंकि शिबू ने कभी ऐसा पहले तो नहीं बोला था किसी भी बात पर। 'छोटी होने' या 'बड़ी होकर कुछ अलग करना है' के बारे में। बाकी और लोगों से मैंने यह कई बार सुना है। और पिछले साल जो सुनील मेरी कक्षा में था वह तो सिर्फ बड़े होने की ही बात करता रहता था। पर अभी तो मैं जैसी हूँ वही ठीक हूँ।

पता है, फिर दूसरे दिन क्या हुआ।

जहाँ शिबू की किताबें रहती थीं, वहाँ मैं जब किताब देख रही थी तो मुझे एक किताब दिखी। उस पर लिखा था शमशेर बहादुर सिंह। अचानक लगा कि जैसे मेरा हाथ बड़ा होता जा रहा है और वह किताब की तरफ जा रहा है ताकि वो किताब मैं अलमारी में से ले सकूँ। और फिर क्या वह किताब मेरे हाथ में थी। मैंने महसूस किया कि मैं एलिस की तरह बड़ी हो रही हूँ। बड़ी होते-होते किताब का पन्ना मैंने खोला है। किताब में मुझे खरगोश दिखा। फिर दिखा छोटा दरवाज़ा और जैसे कि बड़ी होते-होते मेरा सिर टकराया हो ऊपर की छत से।

पर यह एलिस वाली किताब नहीं थी। यह कुछ और थी। पर मुझे एलिस जैसे ही लग रहा था। और मैंने तो कोई दवाई नहीं पी थी। बस किताब हाथ में ली थी। शमशेर बहादुर सिंह का नाम किताब पर देखा था। खैर, एलिस की कहानी सुनी थी ना शायद इसलिए वैसा महसूस हो रहा था। पर यह मुझे मेरे जादू जैसे लग रहा था। अच्छा लग रहा था।

खैर, मैंने वह किताब खोली। उसमें कविता थी। मैंने उसे पढ़ा।

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

अभी गीला पड़ा है

बहुत काली सिल ज़रा-से लाल केसर से

कि धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।

और

जादू टूटता है इस उषा का अब

सूर्योदय हो रहा है।

पढ़कर मन किया शिबू को बोलूँ कि मैं इतनी छोटी भी नहीं। यह कविता मुझे अच्छी लगी और मैं समझी भी।

भोर देखती हूँ तो कभी यह तो नहीं सोचा था कि इतनी नीली है और उसमें सूरज का दिखता लाल रंग कैसे और तरह से भी दिखाई दे सकता है। यह कविता में पढ़ना अच्छा लगा। और इसे मैंने अपनी डायरी में लिख भी लिया है। ऐसा कहके कि यह कविता एलिस के नाम पर है।

क्यों क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—
जैसे फिल्म में मकोतो एक तकनीक की मदद से समय में आगे-पीछे जाकर उन चीज़ों को बदल देती है जो उसे परेशान करती थीं। वैसे ही यदि तुम भी समय में आगे-पीछे जा सकते तो क्या बदलते, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगले अंक के लिए सवाल है—
चाहे मौसम जो भी हो, गरम चाय या दूध पर फूँकने से वो ठण्डे क्यों हो जाते हैं? अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।
जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

जब मैं छोटी थी तो हमारी बस्ती में टैंकर नहीं आता था। तो हमें पानी लेने दूर जाना पड़ता था। सर पर बहुत सारे बरतन रखकर लाना पड़ता था। गर्मी में हमें बहुत दिक्कत होती थी। धूप में मेरा सर बहुत दुखता था क्योंकि हमें बहुत वज़न के बरतन उठाना पड़ता था। तो मैं अगर समय में पीछे जा सकती तो टैंकर वाले को बुलवाती और घर-घर में नल लगवाती। सबको बहुत पानी देती। और मैं खुश हो जाती। मैं ऐसा इसलिए करना चाहती हूँ क्योंकि हमें बहुत कम पानी मिलता था। हम रोज़ नहा भी नहीं पाते थे।

अदिति धुर्वे, 12 वर्ष, बटेर समूह, जीवन शिक्षा पहल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

अगर मैं पीछे जा सकती तो सबसे पहले जानवरों की व्यवस्था करती क्योंकि जानवरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। उन्हें मार दिया जाता है। और भी बहुत सारी चीज़ें हैं जिन्हें मैं बदलना चाहती हूँ। जैसे पहले मैं पढ़ नहीं पाती थी। पर अब मैं चाहती हूँ कि मैं अच्छे-से पढ़ सकूँ। समय में आगे जाकर मैं पुलिस बनती क्योंकि हमारे समाज में बहुत अपराध होते हैं। मैं चाहती हूँ कि उन अपराधों को रोक सकूँ।

नन्दिनी, आठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

जब मैं सात साल का था तब मैंने एक गलती कर दी थी। वो गलती ये थी कि मैंने एक गमला तोड़ दिया था। वो गमला मेरी चाची का था। तो मैंने डर के मारे अपनी मम्मी को नहीं बताया और मैं सो गया। अगले दिन जब मैं सोकर उठा तब मेरी मम्मी ने मुझसे बोला कि तुमने मुझे सच किसलिए नहीं बताया। तो मुझे समझ नहीं आया कि मम्मी को किसने बताया। मैंने डरते हुए पूछा कि मम्मी कौन-सा सच। तो मम्मी ने बोला गमला तोड़ने वाला सच। तो मैंने बोला मम्मी गलती से टूट गया था। तो मम्मी एक गमला खरीदकर लाईं और मेरी चाची को दे दिया। तब से मेरी चाची को लगता है कि मम्मी ने उनका सामान वापिस कर दिया। और तब से हमारी बात नहीं होती है। काश मैं दुबारा सात साल का हो जाता और जब मैंने गमला तोड़ा था तो मैं अपनी मम्मी को बता देता। तो आज मेरी चाची से लड़ाई नहीं होती।

तौफीक, तेरह साल, मंज़िल संस्था, दिल्ली

अगर मैं समय में पीछे जा पाती तो मैं यह देखना चाहती कि मेरी बड़ी बहन का जन्म कैसे हुआ था। देखना चाहती कि उस समय वो कैसी दिखती थी। उसकी आँखें कैसी थीं, उसकी नाक कैसी थी, उसने पहला शब्द क्या बोला, कब पालता पढ़ना सीखा आदि बहुत सारे सवालों का जवाब पाने के लिए मैं उसका अच्छे-से निरीक्षण करती। क्योंकि उम्र में मुझसे बड़ी होने के कारण मैंने उसे देखा नहीं। और उस वक्त हमारे पास इतने पैसे नहीं थे कि फोटोग्राफर को बुला सकते या मोबाइल ले सकते।

प्रदन्या शाह, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अगर मैं समय को पीछे कर पाती तो मैं अपने आप को पीलिया नहीं होने देती। मुझे बहुत खतरनाक पीलिया हुआ था। बचने का चांस नहीं था। फिर रोज़ बेलपत्र खाने से मैं ठीक हुई। एक-दो महीने तक स्कूल भी नहीं जा पाई थी। मुझे बहुत बुरा लगा था। मैं एग्ज़ाम भी नहीं दे पाई थी। बस इसी बात को मैं बदलना चाहूँगी।

साक्षी गोस्वामी, सातवीं, माधव विद्या मन्दिर हाई स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

अगर मैं समय में आगे-पीछे जा सकता तो मैं आगे जाता और दुनिया का सबसे अच्छा फुटबॉलर बनता। और सारे मैच और वर्ल्ड कप जीतता। क्योंकि मुझे दुनिया का सबसे अच्छा और सबसे बड़ा फुटबॉलर बनना है। और बहुत सारी ट्रॉफीज़ जीतनी है अपने लिए भी और अपने देश के लिए भी।

साईश गुप्ता, तीसरी, हेरिटेज एक्सपीरिएंशियल लर्निंग स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

चित्र: साहिल कुमार नाग, चौथी, शासकीय आवासीय पोटा केबिन पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

मैं फिर से अपना बचपन जीना चाहता हूँ। मैं समय में पीछे जाकर वो सब करना चाहता हूँ जो पहले नहीं कर पाया था। जैसे मेरे जिगरी दोस्त प्राथमिक शिक्षा के बाद अलग-अलग स्कूलों में पढ़ने गए। मुझे लगता है कि काश मैं उस दोस्त के साथ उसके स्कूल में पढ़ पाता तो कितना अच्छा होता।

मैंने अब तक कई पक्षियों का शिकार किया है। और कुछ पशुओं का भी जो बहुत सुन्दर दिखते थे। पीछे जाकर मैं उन्हें नहीं मारना चाहता हूँ। बचपन से आज तक मैं हमारे आदिवासियों के शादी-त्योहार वगैरह में नहीं नाचता था। मुझे अभी भी ढोल वगैरह बजाना और बजाते हुए नाचना नहीं आता है। इसलिए मैं बचपन में वापिस जाकर नाच-गाना सीखना और उसका आनन्द लेना चाहता हूँ।

अपने स्कूल में जो-जो शिक्षक ज़्यादा मारते थे उनसे बचकर उनके विषय में ज़्यादा ध्यान देता और शिक्षक का विरोध करता कि आप बच्चों को मार नहीं सकते। मेरे साथ कई लड़ाई-झगड़े हुए हैं खासकर किक्रेट, बाटी, छक्का जैसे खेलों में। मैं ये लड़ाइयाँ नहीं करना चाहता।

बचपन से लेकर आज तक मैं और मेरे साथी ज़्यादातर पुस्तक का ही ज्ञान लेते आ रहे हैं। हॉस्टल में रहकर हम अपनी ग्रामीण शिक्षा जैसे धनुष बनाना, गप्पा बनाना, अन्देर बनाना, हुकुम बनाना, हल बनाना आदि बहुत कुछ नहीं सीख पाए हैं। इसलिए अगर मैं पीछे की दुनिया में जाता तो यह सब सीखता।

वेट्टी हिड़मा, बारहवीं, नायनार, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: लकी शंकर भोयर, सातवीं, आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

अगर मैं समय में वापिस जा पाती तो मैं अपने बचपन में चली जाती। क्योंकि तब शरारत करने पर कोई सज़ा नहीं मिलती और सब मज़े करते।

शगुन सिंह बिष्ठ, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

समय में आगे जाकर 25 साल की उम्र में मैं आईएएस ऑफिसर बन जाऊँगी। उसके बाद मैं पाइलट बनने की तैयारी करूँगी। ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि लड़की को पढ़ाना बेकार है। लड़कियाँ कुछ नहीं कर पातीं। तो जब मैं आईएएस ऑफिसर बनूँगी मैं लोगों को प्रेरित करूँगी कि लड़का-लड़की बराबर हैं। और जो लड़के कर सकते हैं वो लड़कियाँ भी कर सकती हैं।

रिंजल माथुर, दिल्ली

अगर मैं समय में आगे-पीछे जा सकती तो उन बच्चों की गरीबी हटाने की कोशिश करती जो इतनी सर्दी में भी सड़क के किनारे जीवन जीने को मजबूर हैं। मैं मनुष्य के जीवन से गरीबी हटा देती और इन्सानियत सभी के जीवन में भर देती ताकि इस संसार में रोज़ जो गलत घटनाएँ देखने-सुनने को मिलती हैं उनका अन्त हो जाए और हम लड़कियाँ निडर होकर अपना जीवन जी सकें।

गुलनाज़, सातवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

अगर मैं समय में पीछे जा सकती तो मैं ये सब कुछ जो सीमेंट का बन रहा है इसे मिट्टी का बना दूँगी। क्योंकि ये सीमेंट का जो सब कुछ सीमेंट बन रहा है तो इससे पानी की बहुत कमी होती है। अगर ये सब मिट्टी का होगा तो पानी की कमी नहीं होगी। और पानी के बिना लोग तरसेंगे नहीं।

सोनिया राणा, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

मैं जब बड़ा हो जाऊँगा तो एक नापसन्द चीज़ से पीछा छुड़ाऊँगा। मैं अपनी शादी रुकवाऊँगा। जब शादी हो रही होगी तब मैं जाकर लाइट बन्द करूँगा और पण्डित को अगवा करूँगा। और शादी कैंसेल होने पर ही उसको छोड़ूँगा।

श्रेयस आडके, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

दो साल पहले एक बीमारी आई थी। सब लोग उसे कोरोना कहते थे। उस बीमारी में कई इन्सानों की जानें गई थीं। तो मैं अपने समय में पीछे जाकर एक दवाई बनाती और उसे पूरे आसमान में फैला देती। फिर कोरोना भाग जाता। सब इन्सान अच्छे-से काम कर पाते। और बच्चे स्कूल भी जा पाते।

मालती उइके, 12 वर्ष, तीतर समूह, जीवन शिक्षा पहल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

अगर ऐसा होता तो मैं अपना भविष्य देखता। मैं देखता कि मैं क्रिकेटर कैसे बनूँगा। और देख लेता कि गणित के पेपर में क्या आएगा तो मैं उसकी तैयारी कर पाता। और फिर मुझे सब टीचर से तारीफ मिलती। और मेरे मम्मी-पापा भी खुश हो जाते।

आरव सेठी, मानव रचना इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं समय में पीछे जाकर अपने जन्म के दिन में जाऊँगा। फिर मैं अपनी चोचरी (तोतली) आवाज़ को बदलूँगा क्योंकि मेरी आवाज़ चोचरी होने की वजह से कुछ लोग मुझे चिढ़ाते हैं। इसलिए मैं मेरी आवाज़ ठीक करूँगा।

प्रज्ज्वल, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

1. अंकल स्मिथ के पास कुछ भेड़ें हैं और कुछ बाड़े हैं। अगर वह हरेक बाड़े में एक भेड़ को रखते हैं तो उनके पास एक भेड़ बच जाती है। अगर वह हरेक बाड़े में दो भेड़ों को रखते हैं तो एक बाड़ा खाली रह जाता है। बताओ कि उनके पास कितनी भेड़ें और कितने बाड़े हैं?

2. दिए गए पिरामिड में प्रश्न चिह्न की जगह पर कौन-सी संख्या आएगी?

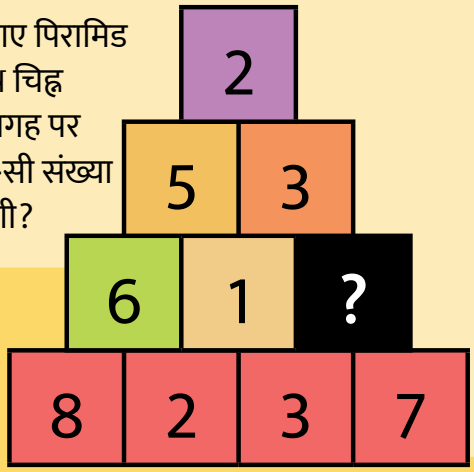

3. इन दो सवालों का एक ही जवाब है।
अ. समोसा क्यों नहीं खाया?
ब. जूता क्यों नहीं पहना?

4. प्रिशा ने अपने दोस्तों से अपने नए घर के नम्बर का अन्दाज़ा लगाने को कहा। उसके घर के नम्बर में तीन अंक हैं। उसके दोस्तों ने 135, 780, 785, और 732 कहा। प्रिशा बोली, "मज़े की बात है कि तुम सभी ने अपने अनुमान में एक नम्बर सही बताया है और सही जगह पर बताया है।" क्या इसके आधार पर तुम प्रिशा के घर का नम्बर बता सकते हो?

5. दी गई ग्रिड में कुछ अनाजों के नाम छिपे हैं। तुमने कितने ढूँढे?

जी	चौं	ना	रा	ज	मा	पु	कु	र
म	क	इ	ज	अ	गें	नु	दू	सा
ज्वा	स	ज	गि	ई	ज	हूँ	गी	बू
मु	र	का	रा	म	खा	पा	ले	दा
उ	सौं	ल	दि	क्का	सू	के	च	ना
बा	ड़	मि	ज्ञा	चौं	अ	र	ह	र
ज	सो	द	चा	व	ल	सिं	ने	सू
रा	ई	लि	पि	ता	सी	घा	जौं	क
स	सो	या	बी	न	से	ड़ा	मि	ला

6. साहिल ने 18 रुपए में 10 बटन खरीदे। उसने लाल, नीले व सफेद रंग के बटन खरीदे। लाल बटन 1 रुपए का, नीला बटन 2 रुपए का और सफेद बटन 5 रुपए का था। अगर उसने हरेक रंग का कम से कम एक बटन खरीदा हो तो बता सकते हो कि उसने कितने लाल बटन खरीदे थे?

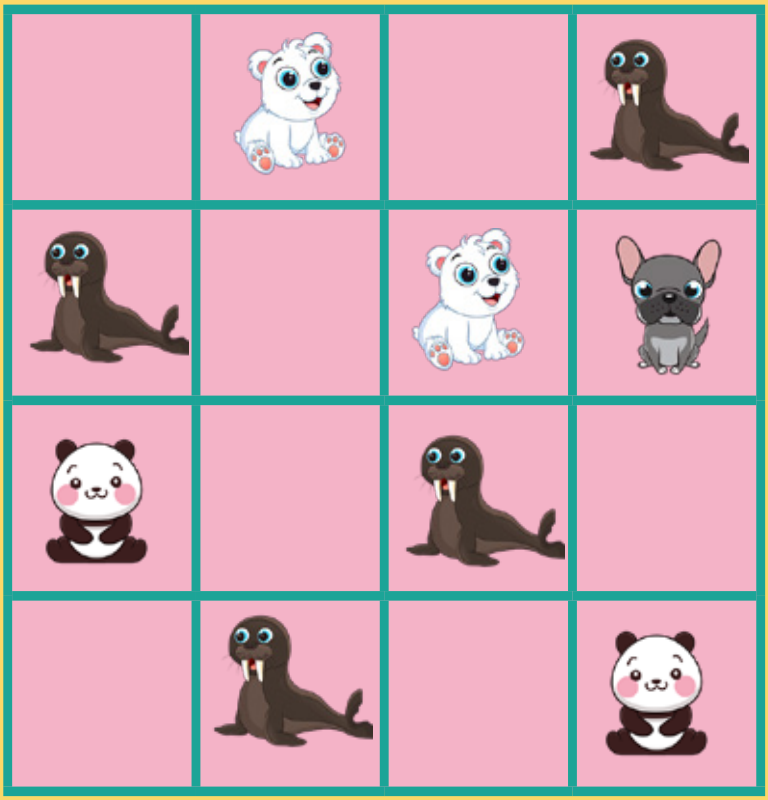

7. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग जानवर आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से जानवर आएँगे?

8. हाना अपने कुछ दोस्तों को फिल्म दिखाने ले जाना चाहती है। उसके पास ज़्यादा पैसे नहीं हैं। इसलिए वह सोच रही है कि 1 व्यक्ति को 2 बार फिल्म दिखाने ले जाना ज़्यादा सस्ता होगा या 2 लोगों को एक साथ ले जाना। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

9. कौन-सी दो संख्याओं को गुणा करने पर 5 उत्तर आता है?

जवाब पेज 42 पर

माथापच्ची

फटाफट बताओ

कौन-सा फल है जो मीठा होने के बाद भी बिकता नहीं है?

([illegible])

ऐसा क्या है जिसे चाहे जितना भी खा लो पेट नहीं भरता?

([illegible])

क्या है जिसे हमें दिनभर में कई बार उठाते और रखते हैं, फिर भी वो हमारे साथ ही रहते हैं?

([illegible])

मैं स्कूटर में हूँ, पर साइकिल में नहीं। मोटर गाड़ी में हूँ पर बैलगाड़ी में नहीं। मैं कौन हूँ?

([illegible])

मैं एक फल भी हूँ और रंग भी। कौन हूँ मैं?

([illegible])

क्या है जो काँच को तोड़े बिना उसके आर-पार जा सकता है?

([illegible])

62

सुडोकू 62

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

1	5			3	7			
2			9	8		3	1	7
9	3	7	1	2	4	6		
6					3			
		3				7	6	
			4			9	2	
			8	4		5	7	
5	8	6			2			
	4	9		1		8	3	

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

जवाब पेज 42 पर

मेरा पन्ना

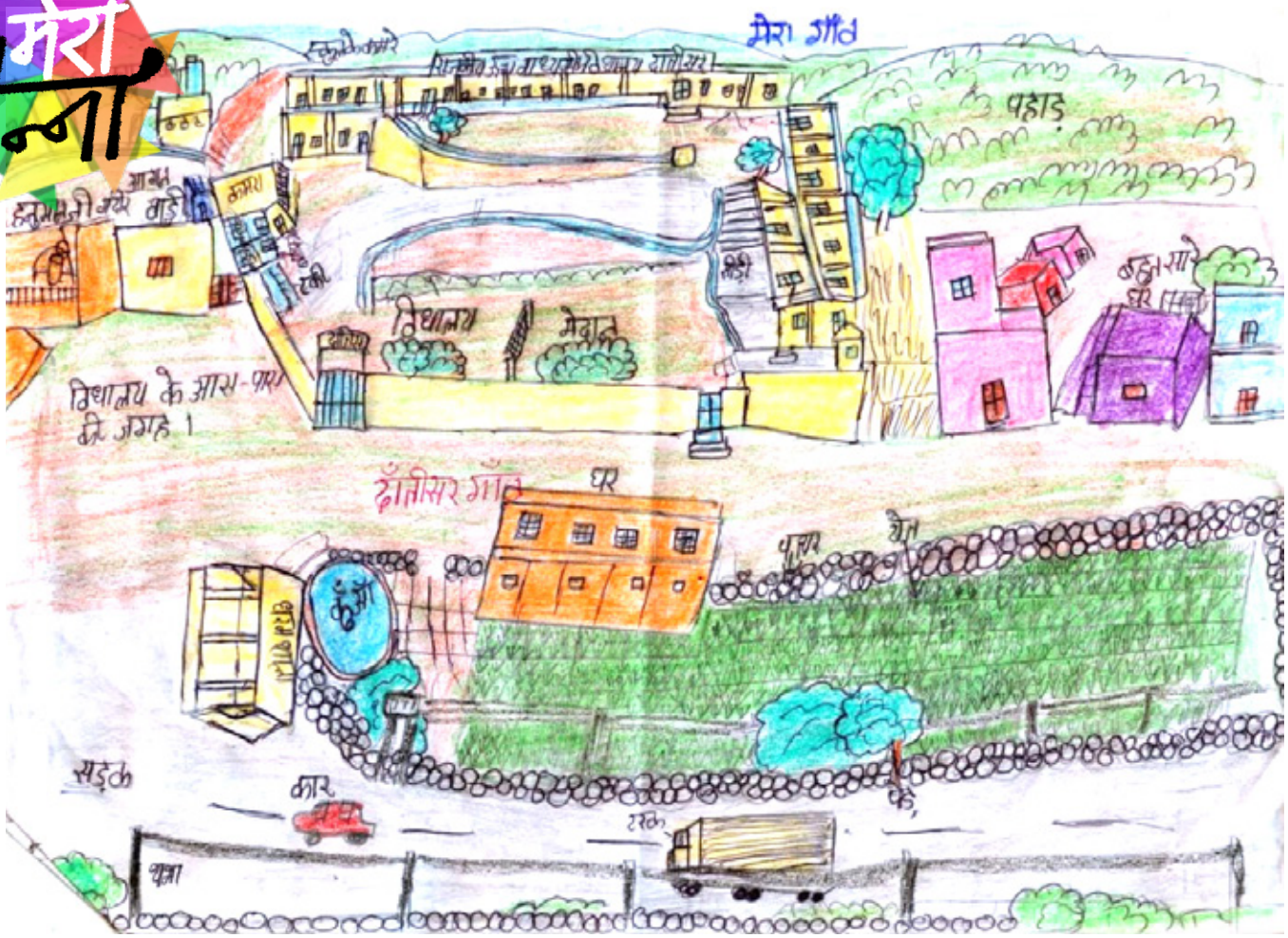

चित्र: चन्दा कुंवर, सातवीं, दन्तेसर, उदयपुर, राजस्थान

सफर रणथम्बौर राष्ट्रीय उद्यान का

सोनिया समीर देशपाण्डे
छठवीं, डीएलआरसी
पुणे, महाराष्ट्र

राजस्थान में सवाई माधोपुर के पास रणथम्बौर राष्ट्रीय उद्यान है। यह उद्यान बाघों के लिए आरक्षित है। मैंने इस उद्यान का सफर किया। तब मुझे बहुत रोमांचक अनुभव मिला।

हम सुबह 7 बजे धान के पहुँचे। वहाँ हमें एक कैंटर ट्रक (खुला हुआ ट्रक) में बिठाया गया। उद्यान को अलग-अलग 90 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। हमें क्षेत्र 4 में तीन घण्टे का सफर करने को मिला था।

हमारे साथ गाइड अंकल थे। उन्होंने बाघ के बारे में जानकारी दी और सभी लोगों को (बिना शोर मचाए) शान्त रहकर बाघ का निरीक्षण करना है ऐसे बताया। शुरू में हमें बहुत हिरण

दिखाई दिए। फिर भारी संख्या में मोर, मोरनी, तोते ऐसे पंछी दिखे। हम सब बाघ को देखने के लिए उत्साहित थे।

गाइड अंकल ने बताया था कि अगर बाघ दिखाई दिया तो पंछी या बन्दर आवाज़ निकालकर चेतावनी देते हैं। एक जगह पर बन्दरों की आवाज़ सुनाई दी तो हमारा कैंटर ट्रक रुक गया। सब इधर-उधर देख रहे थे कि कहाँ से बाघ आएगा। लेकिन हमको बाघ दिखाई नहीं दिया।

फिर हम वापिसी के रास्ते पर आ गए। हमारा घूमने का समय खतम होने को 15 मिनट ही बचे थे। सब एकदम निराश हो गए थे। और अचानक हमारे सामने रास्ते के एक बाजू से बाघ आता दिखाई दिया। सब लोग आनन्दित हो गए। गाइड अंकल ने बताया कि ये T121 नम्बर का बाघ है। वो हमारे सामने 5 फीट की दूरी से धीमे-धीमे अपनी ही मस्ती में घूम रहा था। बीच में उसने नाखून से पेड़ को खरोंचा। फिर मुड़कर आराम से चला गया। हम सब रोमांचित हो गए थे। इतनी नज़दीकी से मैंने पहली बार बाघ देखा था। ये अनुभव मैं कभी भूल नहीं सकती। मैं बहुत खुश हो गई थी।

चित्र: शम्भू, आठवीं, ग्राम कजलस, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

मेरा पन्ना

पहाड़ को पत्र

सोनिया वर्मा
आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

प्रिय मित्र पहाड़,

नमस्कार।

मैं तो यहाँ ठीक हूँ। हल्की-सी सर्दी है। आप चिन्ता नहीं करना। मुझे कोरोना नहीं हुआ है। मैं जब-जब आपको छत से देखती हूँ तो आप ठीक ही लगते हो। कभी बीमार पड़ो तो हाल-चाल देते रहना। नहीं तो मैं कैसे पहचानूँगी कि आप ठीक हो या नहीं।

चलो, छोड़ो। मुझे ना एक पेड़ की चुगली करनी है। मैंने पेड़ को पत्र लिखा था मगर हवा के कारण पता नहीं पत्र कैसे उड़ गया। वैसे पता नहीं पेड़ को पढ़ना आता भी है या नहीं। मेरे खयाल से उस पत्र को हवा, बादल, चाँद, सूरज या टिमटिमाते तारों ने पढ़कर सुना दिया होगा। वैसे आपको तो

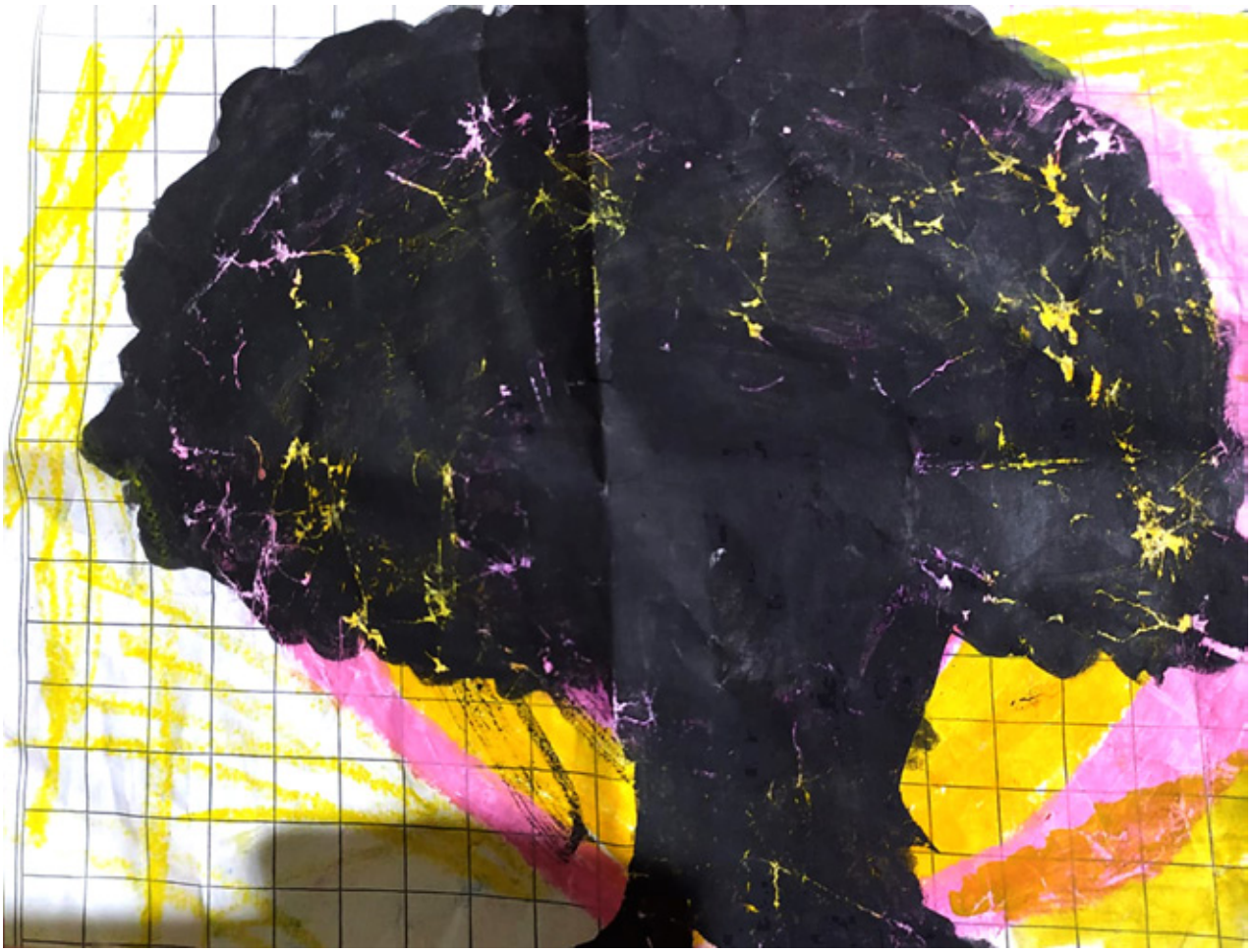

चित्र: कनिष्का माली, तीसरी, सन्दीपनी एकैडमी, मण्डलेश्वर, मध्य प्रदेश

पढ़ना आता है ना? प्लीज़ पढ़ लेना। पेड़ की तरह मत करना।

हवा तो मेरे स्कूल में हमेशा पढ़ने आती है। कभी खिड़की से आती है तो कभी दरवाज़े से आती है। तो पढ़ना ना आए तो हवा से पढ़ना सीख लेना। उससे पत्र मत पढ़वाना। खुद ही पढ़ना। दूसरों से पढ़वाने में वो मज़ा नहीं आता, जो खुद से पत्र पढ़ने में आता है।

अच्छा, हाँ एक पत्र लिखना और बताना कि बादल आपको परेशान करते हैं या नहीं। अगर करते हैं तो मैं उन्हें पत्र लिखकर डाँट दूँगी, क्योंकि वो भी आपकी तरह दूर हैं। चिल्लाकर बोलूँगी तो ना आप तक आवाज़ जाएगी, ना ही बादलों तक।

चलो, इस बात को भी छोड़ो। यह बताओ कि आप ज़्यादातर बारिश में ही क्यों दिखते हो। सच्ची-सच्ची बताना कहीं आप हम बच्चों को चिढ़ाते तो नहीं हो ना? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। एक बात और, मेरे भाई और दोस्तों को डाँट लगा देना। आपको बना नहीं पाते तब भी उल्टी-सीधी लाइनों से बनाते रहते हैं। वैसे मैं भी ऐसे ही बनाती हूँ। गुस्सा मत होना।

मैं ना आपसे मिलने ज़रूर आऊँगी, मगर अभी नहीं। बड़े होकर आऊँगी।

चित्र: कुमकुम, आठवीं, ग्राम कजलस, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

अभी आई तो ठण्ड लग जाएगी। फिर छींक-छींककर हालत पतली हो जाएगी। किसी काम से नहीं बस आपसे मिलने आऊँगी। इन्तज़ार न करना। आने से पहले पत्र लिख दूँगी। अरे हाँ, एक आखिरी सवाल। आप मुझे पत्र तो लिखोगे ना? भूलना मत। तो मिलते हैं अगली बार कुछ नई मज़ेदार बातों के साथ।

बाए

आपकी छोटी-सी मित्र

सोनिया यादव

मेरा पन्ना

तेंदू खाना

बसन्ती कुरामी
नौवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़

एक समय की बात है। भेलवापाल स्कूल के अन्दर दो तेंदू के पेड़ थे। उस पेड़ में छोटी-बड़ी लड़कियाँ जाती थीं। वहाँ चपरासी दीदी तीन जन रहते थे। उनको ऐसे झूठ बनाकर जाते थे कि दीदी हम लोगों को सर्दी-खाँसी हुई है, इसलिए हम तेंदू फल गिराने जा रहे हैं। दीदी, कोई हमें ऐसे बोल दिए हैं कि कच्चा तेंदू खाने से सर्दी-खाँसी छूट जाता है। इसलिए हमें तेंदू गिराने दो।

दीदी को हम लोग कभी-कभी मना लेते थे पर कभी-कभी नहीं। तो ऐसे में कुछ बच्चे चपरासी दीदी से बातें करने में लग जाते थे और कुछ तेंदू गिराने जाकर तेंदू खाते थे। हमारे साथ पढ़ने वाली कुछ बड़ी दीदियाँ रात में टॉर्च पकड़कर पका वाला तेंदू बीनने जाती थीं। हम बच्चे रात में कभी-कभी उठते थे तो दीदी लोग भूत की कहानी सुना देती थीं। हम बच्चे डर के मारे कम्बल ढँक के सो जाते थे।

चित्र: मानवी मुले, तीसरी, सेंट जोज़ेफ कान्वेंट, खण्डवा, मध्य प्रदेश

चित्र: अज़ीन असलम अंसारी, चौथी, सन्दीपनी एकैडमी, मण्डलेश्वर, मध्य प्रदेश

चॉकलेट

सरिता माड़वी
नौवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला
झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़

एक समय की बात है। तब मैं दूसरी-तीसरी में पढ़ रही थी। मैं अपनी मम्मी से बहाना बनाती थी कि मुझे पैन खरीदना है। मम्मी को ऐसा बोलने से वो मुझे आसानी से पैसे दे देती थीं। मैं एक पुराना पैन और पैसे लेकर झट-से दुकान की ओर भाग जाती थी। चॉकलेट खरीदकर फट-से खा लेती थी और घर आ जाती थी।

मम्मी पूछती थीं कि क्या खरीदी? कहाँ है? लाओ, दिखाओ करके गुस्से में कहती थीं। तब मैं वही पुराना पैन मम्मी को दिखाती थी। मम्मी सोचती थीं कि मैं जो पैन खरीदने के लिए पैसे दी थीं, उससे पक्का नया पैन खरीद ली है। मेरी मम्मी पढ़ी-लिखी नहीं हैं और मैं अन्दर-से हँसती थी कि मम्मी को बहाना बनाकर चॉकलेट खा लिया।

गर्मी की छुट्टियाँ

दिलीप कुमार साहू
सातवीं, डी ए वी इंटर कालेज
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

गर्मी की छुट्टियाँ हो गई थीं। मैं नानी के घर गया था। वहाँ पर आम और कटहल के बहुत से पेड़ हैं। मैं अपने दोस्तों के साथ उनके ऊपर चढ़ता, उछलता और खेलता था। ऐसे ही लगभग 2 महीने गुज़र गए। मैं एक दिन छत पर खेल रहा था, तभी मैंने देखा कि बगल वाले घर के छपरे पर खबहे की बेल लगी है। उस बेल में ढेर सारे खबहे लगे थे।

खबहे देखकर मेरा मन होने लगा कि मैं मुरब्बा खाऊँ। मैंने अपनी नानी से मुरब्बा माँगा, तो नानी ने बताया कि खबहे अभी कच्चे हैं। परन्तु नानी मेरा बहुत दुलार करती हैं। इसलिए उन्होंने मेरे लिए मुरब्बा बनाने की ठानी।

मेरी नानी ने पानी में खटाई मिलाई। फिर उसमें सूखी मिर्च, जीरा, अजवाइन और नमक एक साथ भूनकर पीसकर मिला दिया। फिर गुड़ डालकर खूब फेंट दिया और बेहतरीन शरबत तैयार हो गया।

यह बिलकुल मुरब्बे का रस लगता था।

गणित पहेली जवाब

1. 3 बाड़े और 4 भेड़ें।

2. इस पिरामिड में ऊपर की संख्या नीचे दी गई दो संख्याओं में से बड़ी संख्या में से छोटी को घटाने पर मिली है। 8 - 2 = 6, 5 – 3 = 2। इसलिए सही जवाब होगा: 7 – 3 = 4

3. क्योंकि तला नहीं था।

4. पहला अंक 1 या 7 हो सकता है। यदि 7 होगा तो बाकी तीनों अनुमानों से कोई भी और अंक सही नहीं होगा क्योंकि सभी का केवल एक ही अंक सही है। इसलिए पहला अंक 1 होगा। अनुमान 1 के बाकी दोनों अंक यानी 3 व 5 भी गलत होंगे। दूसरे व तीसरे अनुमान से अंक 8 सही होगा। अब अनुमान 4 से केवल 2 ही सही हो सकता है। तो घर का नम्बर होगा 182।

5.

जी	चौं	ना	रा	ज	मा	पु	कु	र
म	क	इ	ज	अ	गें	नु	टू	सा
ज्वा	स	ज	गि	ई	ज	हूँ	गी	बू
मु	र	का	रा	म	खा	पा	ले	दा
उ	सों	ल	दि	क्का	सू	के	च	ना
बा	ड़	मि	ज्ञा	चौं	अ	र	ह	र
ज	सो	ढ़	चा	व	ल	सिं	ने	सू
रा	ई	लि	पि	ता	सी	घा	नौं	क
स	सो	या	बी	न	से	ड़ा	मि	ला

6. यदि साहिल दो सफेद बटन खरीदता तो उसके पास बाकी के 8 बटन खरीदने के लिए केवल 8 रुपए बचते। तब वो नीले रंग का कोई बटन नहीं खरीद पाता। यानी कि उसने 1 सफेद बटन खरीदा होगा। तो अब उसके पास 18-5=13 रुपए बचे। अब तुम्हें 13 रुपए में 9 बटन खरीदने की अलग-अलग स्थितियों का अनुमान लगाना होगा। जैसे कि

स्थिति 1: 1 लाल व 8 नीले बटन। तब कुल कीमत होगी 1 x 1+ 2 x 8 = 1 + 16 = 17 रुपए। पर इतने रुपए तो उसके पास थे नहीं। तो यह नहीं हो सकता। इस स्थिति को पलटकर देख सकते हो कि यदि वह 8 लाल और 1 नीला बटन खरीदता तो कुल कीमत होती 8+2=10 रुपए।

स्थिति 2: 3 लाल व 6 नीले बटन। तब कुल कीमत होगी 3 x 1 + 2 x 6 = 3 + 12 = 15 रुपए।

स्थिति 3: 4 नीले व 5 लाल। तब कुल कीमत होगी 4 x 2 + 1 x 5 = 8 + 5 = 13 रुपए।

तो साहिल ने 5 लाल बटन खरीदे थे।

7.

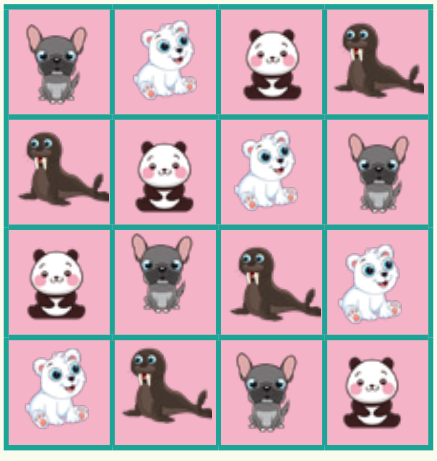

8. 2 दोस्तों को एक साथ ले जाने पर हाना को 3 टिकट खरीदने होंगे। यदि वह 1 ही दोस्त को दो बार ले जाएगी तो दोनों बार उसे भी उसके साथ जाना होगा। यानी कि उसे कुल 4 टिकट खरीदने होंगे।

9. 1 और 5

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

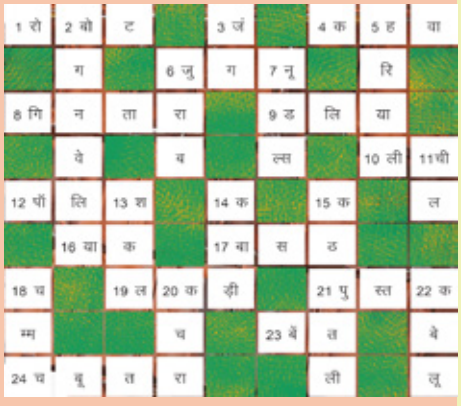

सुडोकू-62 का जवाब

1	5	8	6	3	7	2	9	4
2	6	4	9	8	5	3	1	7
9	3	7	1	2	4	6	8	5
6	1	2	7	9	3	4	5	8
4	9	3	2	5	8	7	6	1
8	7	5	4	6	1	9	2	3
3	2	1	8	4	9	5	7	6
5	8	6	3	7	2	1	4	9
7	4	9	5	1	6	8	3	2

तुम भी जानो

डायनासौर की आवाज़

पिक्चरों में हमने अमूमन डायनासौर को चीखते-दहाड़ते ही सुना है। लेकिन हाल ही में पता चला है कि उनकी आवाज़ें भी उतनी ही विविध थीं, जितना वे खुद थे। उनमें से कुछ का वज़न 1 किलोग्राम से भी कम था, तो कुछ का 72 टन से भी ज़्यादा। और कुछ की गर्दनें 16 मीटर लम्बी थीं। इन सब बातों का असर उनकी आवाज़ पर हुआ होगा। एक शाकाहारी डायनासौर *पैरासॉरोलोफस ट्यूबिकेन* की कलगी में तीन जोड़ी नलियाँ थीं जो उसकी श्वास नलियों में पहुँचती थीं। उसके जीवाश्मों की जाँच से पता चला है कि उससे एक भोंपू जैसी, लेकिन बहुत गहरी ध्वनि निकलती होगी। यह आवाज़ उस समय के जंगलों में काफी डरावनी रही होगी!

सर्दियों में ज़्यादा ज़ुखाम क्यों?

इसका जवाब तुम्हारी नाक के बलगम में छिपा है। पूरी नाक में बलगम यानी म्यूकस की एक पतली परत बालों और कोशिकाओं को घेरे रहती है। इसमें हमारे प्रतिरक्षा तंत्र की कुछ ऐसी पुटिकाएँ (vesicles) हैं जो वायरस पर हमला करती हैं। बाहरी दुनिया से शरीर का पहला सम्पर्क तो हमारी नाक ही करती है और बलगम की ये परत उस दुनिया के कुछ हमलों से हमारी सुरक्षा करती है। पता चला है कि तापमान के महज़ 5 डिग्री सेल्शियस गिरने से नाक की कोशिकाएँ ये पुटिकाएँ कम बनाती हैं। साथ में इन पुटिकाओं की वायरस को रोकने की क्षमता भी कम हो जाती है। तो अगली बार नाक के बलगम को छी कहने से पहले एक बार सोच लेना।

हिमपर्वत के पिघलने की आवाज़

जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व के पहले से कुछ अधिक हिमपर्वत पिघल चुके हैं और पिघल रहे हैं। इनके पिघलने की आवाज़ रिकार्ड करने के लिए कलाकार शोभाँ मैकडॉनल्ड वैज्ञानिकों के साथ मिलकर काम कर रही हैं। वह एक ऐसा इन्स्टलेशन तैयार कर रही हैं जिसमें समन्दर की आवाज़ें, पेंटिंग और शिल्पकला भी शामिल होंगे। यह इन्स्टलेशन 2024 में प्रदर्शित होगा। इसके लिए ग्रीनलैंड के पास के समन्दर में अलग-अलग गहराइयों पर माइक लटकाकर दो साल के अन्तराल में हर दो घण्टे में एक ऑडियो रिकार्ड होता जाएगा। इसमें महासागर के वन्यजीवों की आवाज़ों को भी रिकॉर्ड किया जाएगा।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

nbt.india एक: सूते सकलम्
Knowledge PARTNER of THE NATION

Ministry of EDUCATION Government of India

G20 भारत 2023 INDIA

Azadi Ka Amrit Mahotsav

NEW DELHI WORLD BOOK FAIR

50 Years NEW DELHI WORLD BOOK FAIR 1972-2022

THEME Azadi Ka Amrit Mahotsav

25 February - 05 March 2023
Pragati Maidan, New Delhi
11.00 am to 8.00 pm

GUEST OF HONOUR COUNTRY
FRANCE

COME BE A PART OF THE CHILDREN'S PAVILION!

Participate in:

- Storytelling sessions
- Illustration workshops
- Inter-school quiz competition
- Essay writing competition
- Session on toy-integrated learning and puppet show

and many more...

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन